अंक : जनवरी-मार्च, 2023

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जनवरी-मार्च, 2023

बरस : 46 अंक : 2 पूर्णांक : 158

संपादक
श्याम महर्षि

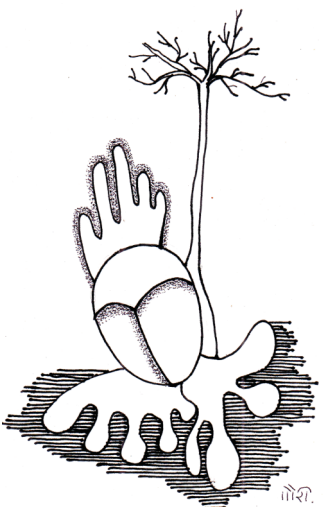

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com
e-mail : rajasthalee@gmail.com

ग्राहक शुल्क
पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

अंगरेजी हकूमत सूं आजादी सारू होळी री धमाळां — *रवि पुरोहित* — 3

कहाणी

हाई-वे रो कागलो अर केसू — *रामेसर गोदारा* — 5

नामरद — *डॉ. मदन सैनी* — 15

बगत री बात — *मइनुदीन कोहरी 'नाचीज़'* — 22

लोक-संस्कृति

राजस्थानी लोकगीतां में सगां रो लाड करै गाळियां — *विमला महरिया 'मौज'* — 25

लोककथा

लोकदिखावो — *हंसराज साध* — 29

कविता

जगपति : दो कवितावां — *बी.एल. माली 'अशांत'* — 31

पीहर-सासरो / सिणगार — *डॉ. अनिता जैन 'विपुला'* — 33

हे शिव! अेकर पाछा बावड़ो — *मीनाक्षी पारीक* — 35

अघोरी काळ / बिरह / आंख्यां सूनी जोवै बाट — *अनीता सैनी 'दीप्ति'* — 37

गजल

दो गजलां — *राजेश विद्रोही* — 39

सबद-विचार

'आडो' सब के आवणो / 'झाड़' समै अनुरूप — *सज्जन लाल बैद* — 41

लोक-लहर

मचमची आवै ई है — *कवि अणजाण* — 43

कूंत

स्वाभिमानी गोमती भाभी — *राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'* — 44

संस्कार का बीज अर चरित्र की साख : 'खुशपरी' — *सी.एल. सांखला* — 47

अंगरेजी हकूमत सूं आजादी सारू होळी री धमाळां

अंगरेज, भारत मांय बिणज-ब्योपार रै ओळावै बिणजारै रै रूप में आंगळ्यां माथै गिणावण जोग आया हा अर देखतां ई देखतां ई बै हिंदुस्तान री धरती नैं मथता थकां इण माथै काबिज होयग्या। आ तो 'छाछ लेवण नै आई अर घर री धणियाणी बणगी' कै पछै 'काल मरी अर आज भूतणी होयगी' री कहावत चरितारथ होयगी। अंगरेजां रो सरुआती मुकाबलो मुगलां सूं हुयो अर हुवै ई क्यूं नीं! बै खुद चलाय'र ईज तो आ आफत मोल लीन्ही ही। कैवै कै अेकर जहांगीर री बेटी बेजां बीमार पड़ी। नीम-हकीम रै सागै झाड़ा-जंतर अर डोरा-ताबीज करयां पछै ई जद कीं कारी नीं लागी तो उणरै इलाज सारू ब्रिटेन सूं डाक्टर बुलाईज्यो। डाक्टर रै इण दळ सागै दो-चार अंगरेज ब्योपारी ई भारत भ्रमण सारू सागै आयग्या। डाक्टर रै इलाज सूं जहांगीर री बेटी पाछी चैळकै पड़गी। डाक्टर रै सागै भ्रमण पर आया ब्योपारी जद जहांपनाह सूं अठै छोटो-मोटो ब्योपार करण री इजाजत मांगी तो बांरी बेगम राजी-बाजी हंकारो भर लियो। ओ हंकारो फोड़ै में पीक दांई बधतो गयो अर ओ गूमड़ो आखिर देस री गुलामी रै रूप में जाय'र फूट्यो।

हालांकै राजपुतानै अर दूजी रियासतां रा लोग इण पछै ई छेहलै मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर रै पख में ई रैया पण बांरी हार रै पछै तो 1857 रो गदर माचग्यो। इण गदर नैं ई राजस्थान रा लोग गीतां में उगेरयो अर चंग री थाप पर लोक रै मूंढै सूं अै बोल निकळ्या पड़्या-

मोडकी मगरी रो पाणी ढाळो ढाळ ढळियो रे
आबू थारै पहाड़ां में अंगरेज बड़ियो रे,
क काळी टोपी रो!
हां रे काळी टोपी रो, ओ देस में छावनियां नाखे रे,
क काळी टोपी रो!
देस में अंगरेज आयो, कांई-कांई ल्यायो रे
फूट नाखी भायां में बेगार ल्यायो रे, क काळी टोपी रो!

अंगरेजां राजपुताना रै घणकरै सासकां सागै राजीपै री संधि कर लीन्ही ही पण भरतपुर रो सासक सूरजमल जाट इणां रै ताबेदारी में नीं आयो अर उणरी बहादुरी देख'र उण बगत रा जनकवियां होळी री आ धमाळ उगेर दीन्ही—

गोरा हटजा रे राज भरतपुर को रे,
गोरा हटजा!
तूं मत जाणै बेटा लड़ै बेटो जाट रो
ओ तो लड़ै है कान्ह बिरज वाळो रे,
गोरा हटजा!

होळी री धमाळां में मारवाड़ रियासत रै आऊवा ठिकाणै रो नांव सिरै पंगत मांय आवै। 1857 री गदर रै बगत जद मारवाड़ समेत केई रियासतां रा राजा अंगरेजां रा पीट्ठू बण्योड़ा हा, अैड़ै बगत में आऊवा ठाकुर कुशालसिंह चांपावत अेरनपुरा अर नसीराबाद छावनी रा बागी सिपाहियां नै आपरै गांव में शरण देय अंगरेजां रा बैरी बणग्या। जोधपुर रै दबाव नाखण उपरांत ई जद ठाकुर कुशालसिंह बागियां नै पाछा सूंपण सूं नटग्या तो ब्रिटिस हकूमत अर मारवाड़ री सिरोळी सेना आऊवा माथै धावो बोल्यो, पण मुट्ठी भर सेना दुस्मण नै छट्ठी रो दूध चेतै कराय दियो। इतरो ई नीं अंगरेज सेनापति एजेंट मैसन रो सिर कलम कर'र गढ रै दरवाजै पर टांग दियो। जोधपुर रो किलेदार कुशालसिंह री इण कीरत-कथा रो बखाण करती धमाळ आज ई होळी रै टाणै गाईजै—

आऊवो नै आसोप धणियां, मोतियां री माळा ओ
बारै न्हाखो कूंचियां, तोड़ावो ताळा ओ
के झगड़ो आदरियो, हां रे झगड़ो आदरियो
झगड़ा में थांरी जीत व्हैला ओ, क अनमी आऊवो।
ढोल बाजै थाळी बाजै, भेळो बाजै बांकियो
अेजेंट नैं मार नै दरवाजै टांकियो, क झल्लै आऊवो।

कैवण नै तो बीकानेर महाराजा गंगासिंह जी ई अंगरेजां री ताबेदारी में रैया पण उणां अंगरेजां रै हुनर रो उपयोग लेयनै आपरी बीकानेर रियासत रो जको चहुंमुंखी विकास करवायो बो जनकंठां में आज ई गुंजायमान है—

आछो तपियो रे राज गंगासिंह को रे, आछो तपियो
भलो तपियो रे राज गंगासिंह को रे, भलो तपियो।

इण भांत होळी री मोकळी धमाळां आपरै लोक साहित्य में भरी पड़ी है। आं अैतिहासिक धमाळां रै ध्वन्यांकन अर अंवेर सारू आपां नैं जाझा जतन करणा चाईजै। खास करनै राजस्थान रै संगीत सूं जुड़ी संस्थावां नैं इण कानी ध्यान देवण री दरकार है।

—रवि पुरोहित

रामेश्वर गोदारा

हाई-वे रो कागलो अर केसू

केसू अधखड़ मिनख हो। घरबार बांको। आछो सरतरियो। मरब्बै नैड़ै जमीन रो धणी, अैन रोही रो राछ। दो ई औलाद। अेक छोरो अर अेक छोरी। छोरी नै टैम साथै ई टीबड़ियै ढळाय दीन्ही। बींरी जमीन हाई-वे रै सारै पड़ै। गांव सूं कोई कोसेक आंतरै। बो तारां री छायां खेत जावतो अर तारां री छायां ई पाछो बावड़तो। 'खेती खसमां सेती' बीं रै मगज मांय बैठ्योड़ी बात ही। खेत जावणो तो आंधी भूलै न मेह चूकै। बण अजै लग होळी-दीवाळी ई नागो नीं कर्‌या। बो दिनूगै हाई-वे होयनै ई खेत जावै पण आवतो पत्थर लैण कट्योड़ै राह होय ई जावै। इसा-इसा साधन बगै है अठै जिका देख्या-सुण्या ई कोनी, ठाह नीं अंधारै मांय कोई कद किचड़को काढ जावै। पछै आखा दिखायां ई ठाहनीं पड़णे कै कुण हो?

अै वैसाख रा दिन हो। बो दिन उगाळी रो खेत जावै हो। गांव सूं मुरबो अेक निकळ्यो होवैलो। बीं नैं सड़क किनारै तड़फतो अेक कागलो दीख्यो। बण आगै लारै तकायो। कोई साधन कोनी आवै-जावै हो। बो सड़क पार करनै कागलै कनै पूग्यो। कागलै नैं देख बो बरड़ायो—''देख बापड़ो जीव! कोई साधन री फेंट मांय आयनै फंफेड़ीजग्यो लागै। लागी ई चोखी लागै। दुख पावै।'' कागलै री चांच खुलरी ही। बीं नैं सांस ई ओखो-ओखो आवै हो। खुलती बंद होवती आंख माथै काच फिरै हो। बीं नैं कागलै माथै

39, दयानंद कॉलोनी, नोहर (हनुमानगढ़) राजस्थान मो. 7014892659

दया आई। कागलै नैं जमीन सूं उठायो अर अेक हाथ मांय लीन्हो। बण ध्यान सूं देख्यो, बीं री डावी पांख ई लटक री ही। बो ओजूं बरड़ायो, ''बापड़ै री पांख तूटगी लागै। लै पंजो ई पाधरो होयग्यो! औ ई गयो लागै। डावी आंख सूं खून रो टोप्पो पड़्यो। लै आ ई फूटगी लागै!

औ स्सो-कीं देखनै बीं रै मन में दया सांचरी। आपरी काख मांय लटकायोड़ी छाछ-राबड़ी री बोतल निकाळी अर कागलै नैं नीचो छोड्यो। बोतल रो ढक खोल्यो अर छाछ राबड़ी सूं चळू भर्‌यो—चल पाणी रो कोनी, के बेरो ईं सूं ई बापड़ै री ज्यान बचज्या। कैय बण कागलै नैं हाथ मांय उठायो अर बीं री चांच चळू मांय डुबोई। पण कागलो कीं कोनी पीय सक्यो। बापड़ै सूं पीवीजै कोनी, चल दो-च्यार टोपा ई चांच मांय न्हाख देवां, के ठाह ज्यान बच जावै। सोचनै बण कागलै री खुली चांच मांय छाछ-राबड़ी रा पांच-सात टोपा गेर्‌या। कीं तो सायद गिटीज्या, बाकी राफां मांय कर बारै आयग्या। पण केसू नैं सांतरो संतोख होयो। बीं री आ आफळ कागलै सारू इमरत रो काम कर्‌यो। कागलै नैं थोड़ो चेतो-सो होयो। देखनै केसू बीं नैं ओजू छाछ-राबड़ी प्यावण री आफळ करी पण बो आपै ई कीं कोनी पीय सक्यो। अबकाळै बण छाछ-राबड़ी सूं बोतल रो ढक भर्‌यो अर बीं री खुली चांच मांय टोपां-टोपां टपकाणी सरू कर दीन्ही। थोड़ी-घणी छाछ-राब कागलै रै कंठां ढळी होवैली पण घणकरी बीं री राफां मांयकर धरती माथै ढुळती-पड़ती गई। पण बीं री आ मैणत अैळी नीं जावै ही। थोड़ी ताळ मांय कागलै कान सांभ्या। आपरी मैणत नैं काम आवती देख केसू रै चेळको-सो आयग्यो। बीं रो होसलो बध्यो। बण सोच्यो—जे पाणी होवतो तो स्यांत आ जावती, कागलो जी जावतो। पण पाणी कोनी तो के उपाय है! ईं सूं ई काम काढां, जितरो इणरै भाग रो, बित्तो तो इणनै प्यावां। आपां नै के लावणी करणी है! थोड़ो घणो सूड़-सट करगै सोवणो ई तो है।

पण बीं रा तरळा बिरथा नीं गया। छेकड़ कागलो चेळकै आयो। केसू रो रूं-रूं राजी हो। तावड़ो सांगोपांग चढ आयो। कागलै नैं सावळ देख बण सोच्यो—चलो, अबै ओ ठीक है, खेत चालां। पण ईं रो के करां? इणनै कोई कींकर-बेरड़ी माथै बैठाय द्यां। तळै तो कोई जीव-जिनावर कै कुत्तो-बिल्लो खा जावैलो, अर जे दरखतसूं तळै पड़ग्यो तो? अधमर्‌यो तो औ इयां ई है। चलो, खेत ले चालां आपणै के भार मांगै है। पाणी प्यागै कोठै मांय ठंडी छायां छोड द्यांगा। आथण तांई सावळ होय जावैलो सायद। औ सोच बण कागलै नैं दोनूं हाथां मांय सावचेती सूं उठाय लीन्हो अर खेत री डांडी पकड़ लीन्ही।

खेत पूगनै केसू कोठै रो कूंडो खोल्यो। कागलै नैं तळै छोड्यो। अेक बाटकी मांय पाणी घाल्यो अर पकड़नै बीं री चांच पाणी मांय डुबोई पण कागलै आपै ई पाणी कोनी पीयो अर न ई बण पाणी कानी देख्यो। पछै बण लप्प मांय पाणी घालनै कागलै रै छाबका

मारग्या। बण ई कीं धड़धड़ी खाई। इण पछै केसू अेकर ओजूं हथाळी मांय पाणी लीन्हो अर बे ई टोपा बीं री चांच मांय न्हाख्या। बीं नैं पाणी प्याय बण झोळै सूं रोट्यां निकाळी अर न्यातणो खोल अेक रोटी रो चूरमो सो चूर बीं आगै खिंडाय दीन्हो। पण बीं नैं क्यांरी भूख ही। अर जे ही तो ई बो बापड़ो अेक पंजै ताण कीकर खड़्यो रैय सकै हो? बो जीवणै पसवाड़ै पड़्यो अटाळ पड़्यो हो अर चूरमै सूं मीट ई कोनी मिलाई।

कागलै नैं छोड केसू चाय चढाई। चाय पीयनै बो थोड़ा-घणा टापा मारण चल्यो गयो। जावतो आडो ओढाळग्यो। कोई गंडक-बिल्लो नीं आय जावै। भातै बगत तांई बो सूड़ करतो रैयो अर छेकड़ पाछो कोई मांय आयग्यो। कागलो पैली सूं कीं ठीक हो।

''लै रे जीवड़ा! तूं तो कोनी जीम्यो, म्हनैं भूख लागगी, म्हैं तो जीमूं!'' कैय बण झोळो उतार्‌यो अर रोटी निकाळ जीमण लागग्यो।

इयां करतां-करतां आथण तांई केई बोरी केसू कागलै साथै बतळायो, केई बारी बीं रै पाणी रा छाबका मार्‌या। केई बारी बीं नैं पाणी प्याणो अर जीमाणो चायो पण कागलै आं बातां री घणी सार कोनी ली। अबै केसू रो घरां बावड़ण रो टैम होय रैयो हो। बण सोच्यो—अबै ईं रो के करां? बारैतो कोई कुत्तो-बिल्लो खा जावैलो, अठै कोई मांय ई छोडद्यां। रोटी-पाणी पड़्यो ई है, के चिंता है अर जे रात नै मरग्यो तो? तो नैं के है। मर्‌योड़ो तो है ई, आपणी तो जीवावण री कोसिस है। जे जीयग्यो तो ठीक नींतर फेंक द्यांगा, और के? आ सोच बो किंवाड़ जड़तो बोल्यो, ''लै ठीक है भायला, म्हैं तो चालूं फेर, दिनूगै मिलांगा। तकड़ो रैयी भल्लो!''

खेत सूं चाल बो छिपतै-सी घरां आयग्यो। छोरो बारै गयोड़ो हो। घरवाळी ही। बण पाणी घाल दीन्हो। बो न्हाय आयो अर चूल्है कनै बैठतां ई दिन वाळी सारी बात आपरी लुगाई सूं सीर करी। बा रोटी पोवती-सेकती गई अर बीं री बातां सुणती गई। छेकड़ बो बोल्यो, ''बेरो कोनी बटो बचैगो के कोनी!''

''थांनै कागलै री इत्ती चिंता है?''

''जीव है बापड़ो।''

''अर ईं जीव रो हाथ दो सालां सूं कूळै, बीं कानी सोच्यो कदैई?'' कैय बण आपरो डावो हाथ आगै कर्‌यो।

''ईं उमर मांय हाड ई कुळैला।''

''ईं उमर नैं बूटी होयगी के? अबै ई न नानी बणी न बीनणी देखी।''

''बीनणी ई देखैगी।''

''थांरै भरोसै तो देखली। तीवळ री मन मांय रैयसी।''

''अबै ई बूढो होयग्यो के?''

''नीं होया तो होवतां देर लागै के?''

आ सुण केसू दपळी मारनै रोटी जीमण लागग्यो। चळू कर आपरी कळी भरी अर बारै आपरी चूंतरी माथै आयग्यो। थोड़ी ताळ कळी पीवी पण मन मांय कागलै री चालती रैयी। छेकड़ कागलै सारू सोचतै-सोचतै नै कणां नींद आई, ठाइ ई नीं पड़्यो।

दिनूगै चटकै उठण री बीं री आदत है। सदां वाळै बगत आपै ई जाग आयगी। हाथ-मुंह धोया। निवरत होयो। चाय पीवी अर जोड़ायत नैं बोल्यो, ''रोटी त्यार है के?''

''हां, बणा दी अर आ ईं चीरड़ी मांय कीं हळदी है, दूध मांय मिलायनै थारै बीं कागलै नै प्या देइयो। चोट-फेंट तावळी ठीक हो जावैली।''

घरधिराणी सूं झोळो लेय बण खेत रो मारग पकड़ लीन्हो। आज बीं रा पग तावळा उठै हा। ''कागलै रो के होयो होसी? जीवै कै मरग्यो?'' बस, इणी भांत रा विचार खेत तांई बीं रै मन मांय घेरो लगावै हा। बण तावळै सै किंवाड़ खोल्या। देख्यो—कागलो जींवतो हो। बीं रै स्यांत-सी आयगी। हाथ मांय उठाय देख्यो। काल सूं कीं भलो-चंगो लाग्यो। झोळै सूं दूध री बोतल निकाळी। बीं रै ढक मांय दूध घाल्यो अर चिमठी अेक हळदी बीं मांय मिलाई। कागलै नै सावळ तरियां पकड़्यो। बण तीन-चार बारी ढक मांय आंगळी डुबोई अर कागलै री चांच मांय दूध-हळदी रा टोपा गेरया। अै दूध-हळदी आज कीं कम खिंड्या। केसू रै ई कीं ठंड पड़ी—चालो, कंठां कीं तो ढळ्यो। ढळ्यो है जणां अैळो नीं जावैलो।

इण भांत बो रोज आफळ करै। बीं री मैणत मांय रोज हवळै-हवळै रंग भरीजै। दसेक दिनां मांय कागलो सांगोपांग आछो-भलो होयग्यो। बो थोड़ो-थोड़ो चालण लागग्यो। अेक टांग रै ताण चालै तो के? बो कूदै। कूद-कूदनै बो आगै बधै पण पांखड़ी घींसीजै। पण चलो बचग्यो। ताखिणो है। ओखो-सोखो आपरो धाको धिका लेवैगो। आ सोच केसू रै मन मांय स्यांत सांचरै।

जद सूं कागलो अेक टांग रै ताण चालणो अर जीवणो सीखग्यो, बीं दिन पछै बो किंवाड़ खुलतां ई आपै ई बारै आ जावै। नैड़ै-तैड़ै पड़्या दाणा कै रोटी रा टुकड़ा कै पछै कीड़ा-मकोड़ा चुग-चुग खावण लागग्यो। केसू घरां जावण लागै तो आपरी पांखड़ी नैं घींसतो हवळै-हवळै फदाक-फदाक उछळतो आपै ई कोठै मांय जाय बड़ै। आं इतरै दिनां मांय केसू अर कागलै बिचाळै अेक काठो संबंध बणग्यो। कागलो थोड़ो-घणो इन्नै-बिन्नै होय जावै कै केसू नै नीं दीसै तो बो कैवै—धोळिया, किन्नै गयो रे!''

केसू री बोली बीं रै कानां पड़तां ई बो अेकर-दोबर कांव-कांव करनै बतावै कै अठै ई हूं अर बेगो ई फदाका मारतो आपरी पांख घींसतो बीं कनै आय थमै।

जेठ लागग्यो। कोई पांच-सात दिन ई गया हा। केसू दिनूगै ई खेत आयग्यो। आडो खोल्यो। बण कांव-कांव करनै बीं सूं रामा-स्यामा करी अर कोठै सूं बारै आयग्यो। बण ई रोटी रा टुकड़ा करनै बीं आगै न्हाख दीन्हा। रोटी चुग कागलो उछळतो-कूदतो तगरै मांय धरयै पाणी मांय न्हावण लागग्यो। आज बीं नैं न्हावतो देख केसू री खुसी रो अंत नीं हो। इणी खुसी मांय बो चाय बणावण सारू लकड़्यां लावण गयो तो आगै चिड़कल्यां रेत मांय न्हावै। औ देख केसू आभै कानी ख्यांत्यो। बादळ रो कठैई मंडाण नीं हो। दिनूगै ई कान बाळती ताती चालै ही। चिड़-कागला न्हावै तो मेह तो आवैगो—लोअगै लाग्यो खड़्यो है। आ सोच बण चाय चढा दीन्ही। चाय बणै अर बो पीवै इतरै मांय कागलो तो न्हाय-धोय कोठै आगै खड़ी बकैण माथै चढण री आफळ करै। औ देख बो बोल्यो, ''देख, पड़ ना जाई, अेक तो तुड़ा लीन्ही, दूसरी टूटगी तो कोई धणी-धोरी कोनी भल्लो!''

कागलो ई जाणै बीं री बात समझै हो। बण ई आपरी कांव-कांव सूं जबाब दीन्हो। केसू बीं रो जबाब सुण नचींतो होय आपै काम-धंधै मांय अळूझग्यो। बो पाछो आयो, इतरै मांय तो बो बकैण रै अेक डाळै जाय बैठ्यो अर केसू कानी कांव-कांव करी, जाणै पूछतो होवै—कियां लाग्यो! औ देख केसू री खुसी रो ई ठिकाणो कोनी हो। कागलै नैं लेय बो आज अैन नचिंतो हो। चलो, पंछी आपरै ठौर-ठिकाणै पूग लीन्हो। आथण तांई कागलै तीन-चार बारी बकैण माथै चढा-उतरी करी। सिंझ्या बो घरां चालण लाग्यो जणा कागलै नै बोल्यो, ''धोळिया, लै अब आज्या तळै, अठै कोई बिल्ली रात नै पांखड़ा खिंडा मेल्हैली।'' धोळियै ई कांव-कांव करनै उत्तर दीन्हो पण बो उतर्‌यो कोनी। केसू ओजूं कैयो, ''मोड़ो होवै, घणा नौरा ना निकळा, आज्या, कोठै मांय रोहड़ जाऊं,पांच-सात दिनां मांय अैन फरबट होय जावैलो।''

अबकाळै जाणै बीं रै ई समझ मांय आयगी। बण अेकर-दोबर कांव-कांव करी, पछै हवळै-हवळै सावचेती सूं तळै उतर आयो। केसू बीं नैं हाथ मांय लेय कोठै भीतर छोडतो बोल्यो—''फालतू मांय मोड़ो करा दीन्हो नीं बावळा!'' अनै बीं नैं छोड किंवाड़ां रै कूंडो लगाय घर कानी चाल पड़्यो।

आज बो अणूतो राजी हो। न्हाय-धोय चूल्है कनै बैठतो आपरी लुगाई नै बोल्यो, ''सुणै के, कागलो बकैण पर चढण लागग्यो।''

''थांनै कागलै टाळ और कीं सूझै ई है के?''

''और नै के होयो इसो?''

''टींगर नै सताइसवों लागग्यो।''

''फेरां री रात आयां, आपै ई लाग जावैला।''

''थांनै लोवै-तोवै बा दीखै है के कठैई ?''

ईं रो बीं कनै कोई पड़ूत्तर नीं हो। सगळै दिन री खुसी अठै चूल्है कनै आवतां ई गमगी। अठै ईं सूं घणी बोलचाल कणां ई कोनी होवै अर इण बातचीत रो केसू कनै कदैई कोई जबाब कोनी होवै। कैवण नै बो घणी ईबारी कैवै—मरबै रो मालक है, कोई सिर भेगै आवै ई आवैगो। पण मरबै वाळा के कंवारा कोनी फिरै? बीं री आंख्यां साम्हीं घणा ई छोरा कंवारा पिरऊै जिकां रै ईं सूं जादा जमीन आवै। बो चूल्है सूं हार जावै जणां बारै बाखळ मांय चौकी माथै आ जावै अर होको-कळी पीय सोय जावै। औ घर बीं रो रातीबासो है बस। ईं सूं घणो कीं कोनी। लुगाई अर आंगणो बीं रै कचकच सूं घणा जादा काम रा कोनी। इण रातीबासै पछै फिरतो-फिरतो सूरज पाछो निकळ आवै अर बो पाछो अेकर ओजूं चूल्है रा दरसण करण पूग जावै। अठै इण चूल्है रै भीतर-बारै दोनूं कानी लाय बळै। बो ओखो-सोखो चाय रो गुटको गिट आपरो झोळो लटकाय पाछो खेत री डांडी पकड़ लेवै। आगै कागलो बीं नैं ई उडीकतो होवै। आज ई जियां ई कोठै कनै पग बाज्या तो कागलै भीतर सूं ई कांव-कांव करी। केसू कूंडो खोल्यो। कागलो बीं नै देखतां ई छौळां चढग्यो। आ देख केसू रै मन मांय आई घर सूं तो ओ जीव ई आछो। कित्तो उडीकै, कित्ता कोड करै! केसू रोट्यां रा टुकड़ा करनै बीं आगै फेंक दीन्हा। बो ई बांनै जीमण लागग्यो। इत्तै केसू आपरी चाय पीवी अर बण रोटी रा टुकड़ा जीम्या। पछै दोनूं आप-आपरै काम लागग्या। भातै बगत-सी केसू पाछो डेरै आयो जणां कागलो तो फदाक-फदाक करतो सगळी बकैण पर फिरै। केसू रै सुख रो कोई पारवार नीं हो। बो बोल्यो, ''आ ज्या नीचै, थकग्यो होवैलो।'' कागलो जाणै बीं री बात समझै, बो होळै-होळै हेठै आयग्यो। बो बींरो उतरणो निरखतो रैयो।

आं दिनां कागलो अैन सावळ होयग्यो। बो दरखतां माथै चढण लागग्यो। दो-तीन बीघा तांईं फुदक-फुदक चालण लागग्यो। हां, तूट्योड़ी पांख नीं संधी ही, बा बियां ई घींसा-घरड़ो करै ही पण बो बीं बिना जीवणो सीखग्यो। पंछी रो जीवण उडारी होवै पण बा बीं सूं कठैई दूर नीसरगी ही। उडारी विहूणै जीवण नै बण अंगेज लीन्हो। अेक आंख-पग अर अेक पांख रो धणी आपरै सगळै अभावां रै उपरांत अबार फदाका मारै हो। आ देख केसू बोल्यो, ''धोळिया, लागै तनैं आजाद करण रो टैम आयग्यो।'' बण ई कांव-कांव करनै कीं कैयो।

''यार, तूं आजाद गिगन रो पंछी, अठै कोठै मांय तनैं कितरा दिन राखूंला!''

बण पाछो कांव-कांव करी।

''चाल, आज तनैं पाछो सड़क पर छोड दयूंला, अठै मेरलै टुकड़ां पर कितरा दिन पळैगो। बण ई आपरी कांव-कांव सूं बीं रो समरथन करयो।

सिंझ्या आवती वेळा केसू कागलै नैं बोल्यो, ''आ ज्या, चालां फेर!''

कागलो बीं कनै आयग्यो। बण बीं नैं हाथ मांय उठा लीन्हो अर गांव कानी चाल पड़्यो। हाई-वे बीं रै खेत सूं दोयेक मरबा हो। बो कागलै साथै बतळावतो चालतो रैयो। छेकड़ सड़क आयगी। बो थोड़ी दूर सड़क-सड़क चाल्यो। अठै दरखतां री जाडेड़ ही। कींकर-बेरड़ी, टाली-सफेदा अर नीम-खेजड़ा आद भांत-भांत रा मोटा अर जूना दरखत हा। बो कागलै नैं अेक बेरड़ी तळै छोडतो बोल्यो, ''लै भायड़ा, आज सूं औ तेरो डेरो है, कुत्ता-बिल्लियां सूं बचनै रैई, आपरो ध्यान राखी अर मिलतो रैई भल्लो!''

बण ई कांव-कांव सूं हामळ भरी।

बो बीं नैं छोडनै घरां आयग्यो। मन मांय अेक कानी खुसी ही तो दूजी कानी अळोच। चूल्है कनै बैठतो बोल्यो, ''धोळियै नैं आज सड़क पर छोड दीन्हो।''

''आछो करयो, कीं घर कानी ध्यान देयसो।''

घरआळी री आ सुण बण आपरी मन री मन मांय राखली। बो आज धिराणी सागै धोळियै री घणी ई बातां बतळावणी चावै हो पण चुप ई भली लागी। अबै? अबै चौकी। बीं कनै घरां चूल्है अर चौकी टाळ और तो कोई जग्यां ही ई कोनी। चौकी माथै माचो उडीकै हो। बो बीं माथै आय पड़्यो। मगज मांय धोळियो घूमै हो। जु मुड़कै फंफेड़ीजग्यो तो? जे किणी गंडक-बिल्ली रै धक्कै चढग्यो तो? भाग बीं रा, आपां के कर सकां। मटो कोठो काल खाली-खाली लागसी, चोखो बोल्यारो हो। इण गत सोचतो-सोचतो बो सोयग्यो। दिनूगै उठ्यो अर पाछो चूल्हो। चाय पीयनै रोट्यां रै झोळै रो पूछ्यो तद, ''ईं लाय मांय सिट्टी तोड़स्यो के?''

''हें?''

''हां, के काम पड़्यो है?''

''इन्नै-बिन्नै बूई-सिणियां मांय टापा मार देंवतो।''

''अै तो मेह बरस्यां सूं पैली कदैई मार देइयो।''

''तो?''

''तो के, कीं मोड़ै जाया करो अर चटकै आया करो। कीं माणसां मांय बैठणो सीखो।''

''चल, कळी भरदै अर जणां जाणो होवै कैय देई।'' कैयनै पैंडो छुटायो। कळी लेय बो पाछो चौकी माथै आयग्यो। केई ताळ बो अठै बैठ्यो कळी पींवतो रैयो अर गळी बगतां नैं देखतो रैयो। अेक-दो आवता-जावता बीं साथै बतळाया, अेक-दोवां साथै बो बतळायो। इणपछै गळी टपतो अेक जणो बीं कनै आय बैठ्यो अर बोल्यो, ''आज घरै कीकर?''

''क्यूं, काणती वाळो काजळ ई कोनी सुहावै के?''

''इसी तो बात कोनी।''

''खेत मांय कोई खास काम तो है कोनी, फेर लुआं बळ्यां...? आराम सूं चल्या जावांगा अर आराम सूं आ जावांगा।''

''और कोई टाबरियो चढ्यो के चित्त?''

''भाजां तो घणाई हां यार, पण पार पड़ी कोनी।''

''अेकलो भाज्यां तो के होवै!''

''तो?''

''आजकाल घरबार अर खानदान कोई कोनी देखै। टींगर जे नौकरी लाग्योड़ै होवै तो कुड़ंबै मांय भलांई सौ नुक्स होवै, छोरी देंवता जेज नीं लगावै।''

''नौकरी तो कठै सूं लगावां, आपणै पल्लै तो भइया खूड है अर सात पीढियां सूं कोई टुक कोनी।''

''आंनै कुण गधी पूछै।''

''तो...?''

''आजकाल जिका अटकग्या, बांरो के तो अट्ठो-सट्ठो होवै कैपदै तेखड़।''

''औ कठै सूं करां!''

''तो पछै मोल घणी मिलै।''

''बांरो भरोसो कोनी।''

बै इण भांत बातां करै हा कै बीं री लुगाई चाय लेय आई। कप पकड़ावती बोली, ''के बातां चालै ही?''

''रुघै खातर कोई रिस्तै री बातां करै हा भाभी!''

सुणनै बीं री ओरी-सी ढळै ही। बा बोली, ''कोई छोरी है के थांरै ध्यान मांय? परिवार थाकल ई होवो भलांई।''

''ना अे भाभी, छोरी कठै है, छोरियां तो सगळी लागै कुवै मांय पड़गी।''

कुओ-खाड पण बा अै बातां सुण कीं हुळकी ही। बा केसू नै कैयो, ''रोटी त्यार है, आथण कीं चटकै आ जाया करो।''

बो आपरो झोळो काख मांय टांग खेत चाल पड़्यो। दिनूगै री बीं रै मन मांय धोळियै सूं मिलण री आयरी ही। सागी ठौड़ आवतां ई हेलो पाड़्यो, ''धोळिया! किन्नै है रे?'' धोळियो खेजड़ी रै पेढै कनै बैठ्यो जीमै हो। हाथ डोढके रै अेक संपळोटियै रै चांच मार-मार बो बीं रो मांस खावै हो।

''ताबै ई आयगी।'' कैय बण आपरै झोळै सूं निकाळ बीं कानी रोटी फेंकी अर बोल्यो, ''ईं पछै जे अै सुवाद लागै तो खा लेई।'' कैय बो आपरै मारग लाग्यो। खेत पूग बो खोरसियै मांय अळूझग्यो। आज बेगो आवण री हिदायत दी। बो हांडी बगत-सी पाछो चाल पड़्यो पण धोळियै नैं नीं भूल्यो। सागी जग्यां आवतां ई हेलो मार्‌यो—''धोळिया, ओ धोळिया!'' पण बो कोनी बोल्यो।

मटी आ कियां होई? के होयो?

''धोळिया रेऽ, ओऽऽ धोळिया!'' कैवण उपरांत बीं नैं कोई दो बीघा आंतरै सूं आवाज आई।

''लै, मटो कित्ती दूर गयो है।'' कैवतां बीं रै स्यांती सी बापरी। बो बिन्नै ई चाल पड़्यो। धोळियो अेक नीम री जड़ां मांय बैठ्यो तीतर ठोकै।

''आ बणी नीं बात।'' कैय बण सड़क कानी देख्यो। सड़क माथै तीतर रा पांखड़ा उडै हा। ''चांच दी है बीं नैं चून देवैगो ई।'' कैय बो धोळियै कनै गयो अर बोल्यो, ''तूं मजा मार, म्हैं चालूं।''

ओ हाई-वे है। इण माथै दिन-रात भांत-भंतीला छोटा-मोटा अणगिणत साधन आवै-जावै। केसू रोज इण मारग आवै-जावै। बो रोज देखै, इण माथै कागलो-कमेड़ी, गोह-गोयरो, सांप-सळीटियो, तीतर-बटेर कीं न कीं बीं नैं मर्‌योड़ो पावै।

आं दिनां आथण-दिनूगै धोळियै नैं बतळावै, तो बो कीं न कीं खावतो पावै—कदै कबूतर, कदै गुरसली, कदै झावो, कदैई किरड़कांटी तो कदेई कुत्तो, कदैई बिल्ली, कदैई लूंकड़ी कै खरगोस तो कदैई कीं कदैई कीं। आठूं पौर नित नूंवो भोजन। इतरा ई दिनां मांय कागलो पळगै मचरूंड़ होयग्यो। आज बो किणी मर्‌योड़ै खिरगोसियै रो जीमण करै हो। केसू रै ठाह नीं के मन मांय आई। बो खरगोसियो खावतै धोळियै नैं कैयो, ''आछा लिखागै ल्यायो है यार, म्हे साळा सारै दिन रचां-पचां पण दाळ-कढी सूं पैंडो नीं छूटै। दिनूगै कढी तो आथण दाळ त्यार पावै। घणै सूं घणा जे कणाई आलू उबाळ लीन्हा तो बात न्यारी है, नीं तो बै ई घणी घणा अर बै ई मुट्ठीचीणा।'' कैय बो चाल पड़्यो। सड़क माथै चालतो-चालतो बो ओजूं बरड़ायो—मरब्बो जमीन न्यारी अर औ देख भाग ई न्यारा, न कमावै न कजावै, फेर ई सात भांत रा माल-मलीदा उडावै। बीं रो मन अैन आमण-दुमणो होयग्यो। खेत पूग आपरै धंधै लागग्यो पण धोळियै रा थाट बीं रै माथै मांय डोलण लागग्या।

इण भांत बो रोज बीं नैं न्यारा-न्यारा जीमण जीमतो देखै। बीं नैं खुद सूं ईसको होवै। आपरै करमां नैं बो फूट्योड़ा मानै। जेठ रा दस-बारहा दिन नीकळ्या हा। आज रात नै धपाऊ रो मेह पड़्यो। बो भखावटै ई खेत जावै हो। सागण जग्यां आवतां ई बीं नैं धोळियो याद आयग्यो। हेलो मार्‌यो—''धोळिया रेऽऽ'' पण बीं कानी सूं कोई जबाब

कोनी आयो। बण दूसर हेलो मार्‌यो—''धोळिया रेऽऽ, ओ धोळियाऽऽऽ हळोतियै रै दिन कित्रै गमग्यो ?'' पण बीं नैं कोई जबाब कोनी मिल्यो। बण अेकर-दो बर ओजूं आवाज लगाई पण बिरथा। बीं रै चिंता होयगी। अेक-दो दरखतां कानी निजर मारी पण बो कठैई निगाह नीं आयो। बो उदास मन सूं खेत कानी चाल पड़्यो। खेत पूग चाय बणाई इतरै मांय ट्रेक्टर वाळो आय पूग्यो। हळोतियो कर्‌यो। ग्वार-बाजरी बीज्या पण बीं रै मन मांय अळोच ई रैयो कै यार, आज धापतै-पाटतै धोळियै रा दरसण ई कोनी होया, माड़ी सूंण ही। बो कर ई कांई सकै हो ? ट्रेक्टर वाळो आपरो काम करनै पूठो आयग्यो। बो ई केई ताळ खेत मांय आमण-दुमणो फिरबो कर्‌यो। काम होयग्यो पण मन कोनी लाग्यो। सोच्यो—चल, काम तो होय ई गयो। धोळियै नैं ढूंढा अर घरां चालां। ओ मत्तो कर बो सड़क माथै आयग्यो। सागी दरखतां रै झुरमटै कनै जाय बण आवाज लगाई, ''धोळिया! आज कठै गमग्यो रे ?''

अबकाळै सड़क रै दूजै पसवाड़ै सूं आवाज आई। बण बित्रै देख्यो—हेंऽऽ! धोळियो अेकलो कोनी। बो अेक दूजै कागलै सूं चांच भिड़ावै हो। लै, औ चोखो होयो, अेक और जोड़ीदार मिलग्यो। बण ध्यान सूं देख्यो। औ कागलो कोनी, आ तो कागली है—''धोळियै घर बसा लीन्हो। वाह!'' आ सुणतां ई धोळियै रै ई मुळक सांचरी।

''दिनूगै जणां ई म्हनैं कोनी मिल्यो के ? म्हनैं लागै अबै तूं कोनी मिलै। जे दिनूगै सणै जोड़ै दरसण देय देंवतो तो म्हनैं ई जमानै अर छोरै रो घर बसण री आस बंधती रे!'' कैय बो घर कानी चाल पड़्यो—''चलो, बापड़ै रो घर बसग्यो, कोई छोड-छिटकायोड़ी होवैली, होय सकै कोई विधवा होवै पण अेकलपै सूं तो ठीक है, दो दो ई होवै। जे आपरलो ई इयां कर लेवै तो बीं नै कुण रोकै!'' आ सोचतो-सोचतो बो कोई सौ अेक पांवडा चाल्यो होवैला कै के ठाह बीं रै मन मांय के आयो, बो पाछो मुड़ग्यो अर धोळियै कनै जा पूग्यो अर बोल्यो, ''लै, इन्नै आ धोळिया!'' कैय बण बीं नैं आप कनै बुलायो। बो बीं कनै आयग्यो। बण धोळियै नैं हाथ मांय उठायो। धोळियो ई बीं रो बरस पाय घणो खुस हो। पण चाणचकी केसू अेक हाथ सूं बीं री धड़ पकड़ी अर दूजै हाथ सूं नाड़। दोनूं हाथां नैं अेक झटकै सूं उलटा घुमाय बीं री गिच्ची मरोड़ न्हाखी अर अेक झाड़कै कानी बगा दीन्हो। बीं कागलै रो साबतोड़ो पंजो छिणेक मांय दो-तीन बर ऊंचो-नीचो होयो अर स्यांत होयग्यो। अर केसू बरड़ावतो चाल पड़्यो—''साळा काणां-कुचडंडा रा घर बसज्या अर म्हारला... मोबी बकरै जिसा जुवान कंवारा रुळता फिरै। अै चांच भिड़ावै अर अठै घरै लुगाई सागै बोलण तांई रा टोटा।''

कागली औ देख अेकर-दो बर बीं रै सिर ऊपरांकर गेड़ा काट्या अर छेकड़ आपरै धणी कनै जायनै बैठगी। ईं सूं जादा बा बापड़ी कर ई के सकै ही!

◆◆

मदन सैनी

नामरद

''साब, ओ साब!''

''हां।''

''अेक बात पूछूं?''

''हां, पूछो।''

''साब, म्हैं नामरद हूं कांई?''

''आ म्हैं कियां कैय सकूं!'' म्हैं इचरज सूं करणीदान जी कानी जोवतो थको कैयो।

''तो आ बतावो कै नामरद रै टाबर-टीकर हुय सकै कांई?''

''नीं तो!'' म्हैं कैयो।

''तो म्हारै तो तीन छोरा अर दो छोरयां है, फेर ई सूवटी म्हनैं नामरद कियां बतायो?'' करणीदान जी इचरज करता थकां कैयो।

''कुण सूवटी?'' करणीदान जी री बात सुणनै म्हारी जिग्यासा जागी।

''आ अेक लांबी कहाणी है...'' कैवता थकां बै बतावै लाग्या—

''अंगरेजां रै जमानै री बात है। म्हारै मानगढी रा जागीरदार मानसिंघ जी रा तीस हाळी-बाळद्यां मांय सूं सूवटी भी अेक ही, जकी देस री आजादी पछै मानसिंघ जी रै हाळी जेठू सागै घरबास करयो अर अबार महीनै-अेक पैलां उणरो सुरगवास हुयग्यो।

चिमनाराम माळी रै कुवै कनै, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राज. 331803 मो. 7597055150

अबार गांव सूं चौथू आयो हो। म्हारै सागै चाय पीवतो थको गांव री खबरां सुणाई, जणा बतायो कै गांव में सैंग राजी-खुशी है, हां, जेठू री लुगाई सूवटी नीं रैयी। बा महीनै-भर मांचो पकड़्यां रैयी। आपसूं मिलणो चावती ही। कैवती कै अेक बार कोई करणीदान जी सूं मिला देवो, बै भोत ई भला अर देवता-सरीखा माणस है। म्हैं कैयो कै कोई खबर करवाता तो म्हैं जरूर मिल लेंवतो। पण बिधाता रो लेखो लिख्योड़ो ई नीं मिलणै रो हो, तो कियां मिलतो? चौथू सूं म्हैं बूझ्यो, ''म्हारै बारै में और कांई कैवती ही बा?'' तद चौथू कीं झेंपतो-सो कैयो कै और तो कीं नीं, हां इत्तो जरूर कैयो कै करणीदानजी दयालु तो मोकळा ई हा,पण बै मरद नीं है, नामरद है।'

''अरे मर तेरो भलो हुवै। इसी बात बा कैयी तो कैयी कियां?'' म्हैं चौथू नैं पूछ्यो तो बो बोल्यो, ''आ बात तो थे जाणो अर का सूवटी जाणै, म्हैं कांई कैय सकूं।'' कैयनै चौथू तो गयो परो अर म्हैं सीधो आपरै पाखती आयग्यो। म्हारै समझ में नीं आई कै सूवटी अैड़ी बात कींकर कैयी!'' करणीदान जी बोल्या।

करणीदान जी म्हारै दफ्तर में सोध सहायक रै पद माथै काम करता। बांरै जिम्मै गांवां सूं पांडुलिपियां भेळी करणै रो काम हुवणै रै कारण बै गांव-गांव जातरावां करता अर आपरै गांव तो कोई काम हुवण सूं ई जावता, नीं तो दफ्तर में ईज बै अतिथि-कक्ष रै पाखती बण्योड़ी साळ मांय आपरो जाचो जचायां राखता।

रात नै रोटी जीम्यां पछै करणीदान जी फेरूं म्हारै कनै आयग्या अर बोल्या, ''साब, सूवटी वाळी बात माथै सूं निकळ ई नीं रैयी है?''

''तो माथै सूं निकाळ क्यूं नीं देवो? माथो ई हळको हुय जासी अर म्हैं ई सूवटी री बातां रो सार समझ जावूंला, तो थांनै ई कीं बता सकूंला।'' म्हैं बोल्यो।

''तो सुणो...'' करणीदान जी कैवणो सरू करयो, ''चौमासै रा दिन हा। म्हैं मानसिंघ जी रै कंवर सुमेरसिंघ जी रै सागै बांरी जागीरदारी री जमीन माथै झोला खावता खेतां री सार-संभाळ सारू घोड़ै माथै सवारी करया करतो। बांरै सैकड़ां बीघां में खेत बायोड़ा हा अर बांरा हाळी तीन ठौड़ न्यारा-न्यारा निनाण में लाग्योड़ा हा। गढी रै सारली जाब वाळी जमीन जबरी उपजाऊ ही। छाती-सुदी तो बाजरी ऊभी ही अर थाळी-बाटकै मान मोठ मलारां करै हा। गुवार अर तिलां रो ई कांई कैवणो! चंवळा अर मूंग ई आप-आपरी मठोठ में हा। भादवो लागग्यो हो। हर ठौड़ आठ-आठ जणा काम मांय लाग्योड़ा हा। बाकी गढी रै पिछवाड़ै रसोवड़ै में बाजरै री रोट्यां, ल्हसण री चटणी, कढी अर चिणां री दाळ री रसोई त्यार करणै रो कारज करता। म्हारै अर सुमेरसिंघ जी सारू छाछ-दही, गेहूं रा फुलका, काचर-फळ्यां रो साग, पापड़ अर अचार आवतो।

उण दिन म्हे आगेती-पाछेती संभाळ्यां पछै जाब वाळै खेत पूग्या। आठूं हाळी पांथ में लाग्योड़ा हा। आभै मांय बादळ आवै-जावै हा, पण धरती तपै ही। म्हैं अर सुमेरसिंघ

जी खेजड़ी कनैं जायनै घोड़ां सूं उतरया। अेक हाळी घोड़ां नैं खेजड़ी रै पाखती ई बांधनै दाणो-पाणी देवै लाग्यो। म्हे दोनूं खेजड़ी री छियां तळै सुस्तावै ई हा कै म्हैं देख्यो, साम्हीं पगडंडी माथै दस जणां रो भातो खारियै मांय लियां सूवटी उंतावळी-सी आय रैयी ही। उणरो मूंढो पसीनै सूं हळाबोळ हुय रैयो हो। पगां मांय पगरख्यां नीं ही अर बा थोड़ी-सी चालतां ई अेक पग माथै बीजो पग राखनै सुस्तावै ही। म्हनैं उण माथै घणी ई दया आई, पण म्हारो कांई जोर चालै हो। देखतां-ई-देखतां सूवटी म्हारै पाखती आयगी। म्हैं उणरो खारियो उतारयो। बा खेजड़ी री छियां में अेकै कानी ऊभी हुयगी। सुमेरसिंघ जी बोल्या, ''आवो करणीदान जी, जीमां!''

म्हैं बोल्यो, ''आप ई अरोगो, म्हैं तो इयांई जीम्योड़ो-सो हुयग्यो।''

''आ कांई बात हुई?'' सुमेरसिंघ जी इचरज सूं म्हारै कानी जोवता थकां कैयो।

''आप देख्यो नीं कांई, इण भातै नैं लेयनै आवण वाळी इण डावड़ी री कैड़ी दुरगत हुय रैयी है। इणरी आतमा तो आपां नैं आसीस देवण सूं रैयी, तो म्हैं तो अबै कियां जीमूं, आप ई जीमो! आपरै अठै घोड़ां माथै माख्यां तीसळै, अन्न-धन्न रा भंडार भरया रैवै, फेर ई मिनखां नैं ऊभाणा राखो, आ म्हारै तो कम ई जचै।''

''अरे, इत्ती-सी बात!'' कैवता थकां सुमेरसिंघ जी अेक हाळी नैं हेलो मारयो, ''अरे जेठिया, दौड़नै उरै आई।''

बांरै कैवतां पाण जेठू खेजड़ी तळै आय ऊभो हुयो।

''सूवटी, अठै म्हारै साम्हीं रेत माथै थारा पग मांड!'' सुमेरसिंघ जी सूवटी सूं बोल्या।

सूवटी नाड़ नीची करयां सुमेरसिंघ जी साम्हीं धरती माथै आपरा पग मांड दिया। सुमेरसिंघ जी जेठू सूं बोल्या, ''आं पगां रै नाप री लकड़ी लेयनै दौड़तो ई गढी जाय परो अर बठै मोची सूं इण नाप री पगरख्यां लेयनै आ।''

जेठू सूवटी रै पगां रो नाप लियो अर बठै सूं सौकड़ मनाई। देखतां-ई-देखतां बो मोची कनै सूं पगरखी री जोड़ी लेयनै आयग्यो। सुमेरसिंघ जी सूवटी सूं बोल्या, ''आंनै पैरनै दिखाई तो!''

सूवटी पगरख्यां पैरी। उणरै चैरै माथै मुळक ही। म्हनैं सुकून मिल्यो। सुमेरसिंघ जी बोल्या, ''अबै तो आप भोजन अरोगोला?''

''अबै क्यूं नीं!'' कैयनै म्हे जीमा-जूठो करयो।

उण दिन पछै म्हनैं सूवटी घणै आदर री दीठ सूं देखै लागी। अेक-दो बार तो बा सरमावती-सी कैयो भी, ''करणीदान जी, कदैई म्हनैं ई सेवा रो मौको दीज्यो। म्हैं आपनै किणी काम सारू ना नीं करूंली।''

''अरे बावळी, भगवान हाथ-पग दिया है, तो पछै किणी बीजै नैं सेवा रै नांव सूं क्यांरा फोड़ा घालणा! राजी-खुशी थांरो काम करो अर कोई बीखै री बात हुवै, तो म्हनैं जरूर कैय दीज्यो, म्हारै सारू जो भी बणैलो, म्हैं जरूर करूंलो।'' म्हैं उणनै पडूत्तर दियो हो।

म्हैं करणीदान जी री बात ध्यान सूं सुण रैयो हो। बै आगै बोल्या, ''मानसिंघ जी रो सासरो है चारणवासी रै ठाकरां रै अठै। बठै सूं अेक दिन समाचार आयो कै सूवटी री मां आयोड़ी है, बा सूवटी सूं मिलणो चावै है। कोई आछो-सो सागो देखनै दो दिनां सारू सूवटी नैं चारणवासी भिजवा दीज्यो!''

सूवटी री मां चारणवासी रै ठाकरां रै दायजै में आयोड़ी दासी ही, जिणनैं बै मानसिंघ जी रा ईडर वाळा साढू सागै आपरी बेटी रै ब्याव में ईडर खिनाय दीनी ही अर उणरी बेटी सूवटी मानसिंघ जी रै ब्याव में बांरी राणी सागै दायजै में मानगढी आयगी ही। मानसिंघ जी रै सासरै सूं सूवटी सारू समाचार आयो तो मानसिंघ जी म्हारै कनै आया अर बोल्या, ''करणीदान जी, सूवटी री मां आयोड़ी है। आप इणनैं चारणवासी जायनै इणरी मां सूं मिलायनै ले आवो! चारणवासी अर मानगढी बिचाळै रातबासो लेवणो पड़ैला, सो रातबासो सियागां री ढाणी में कर लीज्यो। बठै जातरुवां सारू आसरा बणायोड़ा है अर अेक चौकीदार भी देख-रेख में छोड्योड़ो है। आप सोनल सांढ सूं आ जातरा पार पटको, क्यूंकै धोरा धरती रो पैंडो है।''

म्हैं आगलै ई दिन सोनल नैं सजाई अर उण माथै सूवटी नैं बैठायनै चारणवासी री जातरा माथै निकळ्यो। आपां 'ढोला-मारू' री ऊंट-सवारी रो जको चितराम देख्या करां हां, ठीक वैड़ो ई नजारो हो। दिन बिसूंजतै-सी म्हे सियागां री ढाणी पूगग्या। गरमी रा दिन हा। आ ढाणी अेक बडो गांव हो। गांव रै किनारै बटाउवां रै ठैरण सारू अेक साळ बणायोड़ी ही। पाणी री कुंड अर जाजरू भी हो। चौकीदार म्हारी आव-भगत करी अर रोटी-पाणी रो सरंजाम ई कर दीन्यो। साळ मांय दो मांचा हा अर अेक मांचो बारै चौकीदार सारू हो। चौकीदार बोल्यो कै आप आयोड़ा हो, तो म्हैं आज म्हारै घर जाय सकूं हूं कांई ? म्हैं इजाजत देय दीनी। बो गयो परो। म्हैं चौकीदार वाळै मांचै माथै सोयग्यो।

आधीक रात गयां सूवटी उठनै म्हारै पाखती आयनै म्हनैं जगायो अर बोली, ''म्हनैं अेकली नैं नींद नीं आवै, थे साळ मांय आयनै सोय जावो।''

म्हनैं अटपटो-सो लाग्यो। मानगढी सूं सियागां री ढाणी तांई मून धार्‌योड़ी सूवटी रै मूंढै सूं अैड़ी बात सुणनै म्हनैं इचरज हुयो। म्हैं उणनैं जियां-तियां करनै इण बात सारू राजी करी कै साळ मांय गरमी लागै तो मांचो बारै ढाळनै उण माथै सोयजा, म्हैं तो थारै कनैं ईज हूं।

सूवटी खासा ताळ तांई बठै ईज ऊभी रैयी। पछै साळ सूं बारै लायनै मांचो ढाळ्यो अर उण माथै आडी हुयगी।

दिनूगै सियागां री ढाणी सूं कलेवो-पाणी कर्‌यां पछै म्हारी जातरा फेरूं सरू हुई। अबै सूवटी रो कीं हियाव खुलग्यो हो। बा बोली, ''करणीदान जी, धरती माथै मिनख-लुगायां रा ब्याव क्यूं करीजै, पसुवां रा तो ब्याव नीं हुवै?''

''जीव-जंतुवां अर पसु-पंखेरुवां सूं मिनख सिरै हुवै, इण सारू मिनखां री बरोबरी कोई नीं कर सकै।'' म्हैं कैयो।

''तो ब्याव करणो जरूरी हुवै कांई?'' बा फेरूं बोली।

''नीं कोई जरूरी कोनी हुवै। घणा ई लोग-लुगाई बिना ब्यायोड़ा ईज आपरी जूण पूरी कर देवै। साधु-साध्वियां अर संत-संन्यासी भी ब्याव नीं करै।'' म्हैं बोल्यो।

''तो मिनख-लुगायां रै अेक-बीजै बिना सरै तो कोनी?'' बा बोली।

''सार्‌यां तो सरै ई है अर नीं सार्‌यां नीं सरै, पण मिनखादेही मिली है तो आपांनैं आपणी मरजादा मांय रैवणो चाईजै।'' म्हैं उणनैं समझावता थकां कैयो।

''म्हैं तो अेक ई बात जाणूं कै मिनख हुवै अर लुगाई हुवै, पछै आ मरजादा कांई हुवै?'' सूवटी बियां ई सवाल पूछ्यां जावै ही।

''मरजादा हुवै लिछमण-रेखा!'' म्हैं बोल्यो।

''तो मिनख-लुगाई रा जोड़ा क्यूं बणै?'' बा बात नैं आगै बधावती बोली।

म्हनैं उणरी अैड़ी बातां आछी नीं लागी। म्हैं बोल्यो, ''अबार आपां चारणवासी पूगस्यां, बठै आं बातां रो उथळो थारी मां सूं लेय लीजै, म्हारो माथो मत खा।''

म्हारी बात सूं सूवटी अणमणी-सी हुयगी अर पछै मून धार लीनी।

म्हे चारणवासी पूगग्या। सूवटी री मां आपरी बेटी सूं मिलनै भोत ई राजी हुई। दोनूं मां-बेटी गळै मिलनै खूब रोई अर दुख-सुख री बातां करी। बठै दो दिन जावतां ठाह ई नीं लाग्यो अर म्हे आगलै दिन पाछा ई मानगढी सारू ब्हीर हुयग्या।

मारग में सूवटी चैळकै पड़्योड़ी ही। आपरी मां अर ईडर री बातां बतावती-बतावती बा फेरूं मिनख-लुगाई रै नातै-रिस्तै री बातां करै लागी। सूवटी कैयो, ''गरमी रा दिन है। सियागां री साळ में जे थे म्हारै कनै सोय जावो तो म्हैं आखी रात थांनै पंखी झळती रैवूं, थे सुख सूं सोय जाया, म्हैं जागती रैयनै रात्यूं हवा घालती रैवूंली! कांई कैवो हो?''

''म्हैं कांई कैवूं, म्हनैं तो बारै ई सावळसर नींद आय जासी, तनैं जे साळ में नींद नीं आवै, तो आवती वेळा सोई ही, उणी भांत जावती वेळा भी रातबासो लेवणो है, और कांई!'' म्हारी बात सुणनै सूवटी मूंढो आंको-बांको कर्‌यो होसी, म्हनैं अैड़ो ईज लखायो।

सिंझ्या पाछा म्हे सियागां री ढाणी पूगग्या। रोटी-पाणी रो बंदोबस्त हो। चौकीदार केई ताळ म्हारै सागै हथाई करी अर फेर आपरै घरां गयो परो। सूवटी रात रा केई बार ''करणीदान जी, करणीदान जी'' कैयनै म्हनैं हेला मार्‍या, पण म्हैं अबोलो ईज रैयो। फेर बा बारै मांचै माथै पसवाड़ा फोरती रैयी। उणनैं स्यात नींद आई ईज नीं ही। भखावटै म्हैं उठ्यो, उणसूं पैलां ई बा फारिग हुयनै न्हाय-धोयनै त्यार हुयगी ही। बठै सूं कलेवो-पाणी करनै म्हे पाछा जातरा माथै ब्हीर हुयग्या। मानगढी आयनै म्हैं मानसिंघ जी नैं बांरै सासरै रा सैंग समाचार सुणाया। बै घणा राजी हुया।

इणी भांत कीं बरस और बीत्या। सूवटी कदैई रात-बिरात मिलती तद अैरी-बैरी बातां करती, पण म्हैं उणरी बातां नैं नीं गिनारतो। थोड़ा दिनां पछै देस आजाद हुयग्यो। राज-रजवाड़ा टूटग्या। अेकै कानी देस आजाद हुयो, तो बीजै कानी बंधुवां मजूर अर दास-दासियां नैं ई आजादी मिलगी। मानसिंघ जी आपरा हाळी-बाळद्यां नैं भेळा करनै कैयो कै अबै थे लोग म्हारै अठै काम नीं करोला, गढी रै पाखती ऊंचलै बास में बसणै सारू थांनै छान-झूंपड़ा करवा देस्यां, थे थांरा घरबास करो अर खुली मजूरी करो। म्हारी जागीर री जमीन मांय सूं थांनै खेती सारू दस-दस बीघा जमीन ई देय देस्यां। महीनै-भर में अैड़ो सरंजाम कर दियो जासी, पछै आप सगळा नूंवै सिरै सूं आपरी घर-गिरस्ती संभाळ्या!

आपरा कौल-वचनां मुजब मानसिंघ जी ऊंचलै बासै में छान-झूंपड़ा बणवायनै बठै बां लोगां नैं बसा दिया। सगळां नैं पांती आया कीं पईसा ई दीन्या। आं घरां मांय अेक घर सूवटी रो भी हो। बा जेठू सागै घरबास कर्‍यो हो। म्हैं कदै-कदैई बांरै घरां ई जावतो हो। अबै ठाकरां रा हाळ्यां री घर-गुवाड़्यां में बधेपो हुवै लाग्यो। म्हनैं ई सुमेरसिंघ जी कैय दियो कै करणीदान जी, आप लोगां री सेवा नैं म्हे कदैई नीं बिसार पावांला, पण अबै आपनै कोई और ई काम-धंधो करणो पड़सी।

मानसिंघ जी री गढी सूं छूट्यां पछै म्हैं ई केई ठौड़ काम कर्‍यो अर लारला दस बरसां सूं आपरै इण दफ्तर में म्हारी सेवा देय रैयो हूं।'' करणीदान जी सार-रूप में आपरै अतीत री आपबीती बतावता थकां मून हुयग्या अर म्हारै मूंढै साम्हीं जोवै लाग्या।

''सूवटी सूं छेकड़ली मुलाकात कद हुई ही?'' म्हैं मून तोड़तो थको कैयो।

''साल-भर हुयग्यो। लारलै बरस आं दिनां में म्हैं गांव गयोड़ो हो, तद जेठू रै घरां गयो हो। उण बगत जेठू तो नीं हो, उण रा दो छोरा अर अेक छोरी ही। सूवटी चाय बणायनै पाई। म्हैं टाबरां रै हाथ में पांच-पांच रुपिया थमाया, तो सूवटी बोली कै अबै तो रामजी राजी है करणीदान जी, अेक बो ई बगत हो, जद म्हे अेक-अेक पईसै नैं ई तरसता हा। म्हैं कैयो, ''बगत सदां अेकसो ई नीं रैया करै। सुख-दुख तो पहियै दांई घूमता रैवै। अेक आवै अर अेक जावै।''

म्हैं आवण लाग्यो तो सूवटी बोली, ''बै आवता ई होसी, थोड़ा और थम जावो।''

''नीं, अबै फेर आवूंला, तद मिल लेवूंला।'' कैयनै म्हैं आयग्यो हो अर आज चौथू सूं अै समाचार मिल्या कै सूवटी नीं रैयी। नीं रैयी तो नीं रैयी, पण उणरी कैयोड़ी आ बात तो रैयगी नीं कै करणीदान जी दयालु तो मोकळा ई हा, पण बै मरद नीं है, नामरद है।'' कैवता थकां बै आपरो माथो पकड़ लियो।

◆◆

फार्म नं. 4, नियम-8

पत्रिका रो नांव	:	राजस्थली
प्रकाशन री ठौड़	:	श्रीडूंगरगढ़
प्रकाशन री अवधि	:	तिमाही
मुद्रक	:	महर्षि प्रिंटर्स, श्रीडूंगरगढ़
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
प्रकाशक	:	महावीर माली
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
संपादक	:	श्याम महर्षि
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
उणां शेयर होल्डरां रा नांव अर ठिकाणा, जिणा कनै कुल पूंजी रा 10% सूं बत्ता शेयर है:		कोई कोनी

म्हैं महावीर माली घोसित करूं कै ऊपरलो विवरण म्हारी जाणकारी अर विस्वास रै मुजब सत्य अर वास्तविकता माथै आधारित है।

महावीर माली
प्रकाशक

मइनुदीन कोहरी 'नाचीज़'

बगत री बात

विमला अर विनोद दोनूं राजी-बाजी आपरी पसंद सूं ब्यांव करयो। दोनूं री गिरस्थी आछी चालती। विमला हंसमुख। हरेक रै मुंह लागणी अर विनोद हंस-हंस साम्हीं आवै। ब्यांव रै दो अेक सालां में दो गूलर जिसा बेटा हुयग्या।

होणी नै कुण टाळ सकै! दोनूं रै हंसतै-खेलतै सुखी परिवार में नीं जाणै किणरी निजर लागी, राजी-खुसी विनोद घड़ीक में हारमोर होयग्यो। विमला रै घर में कूका-रोळो मचग्यो। आ जिकै भी सुणी बो अचंभा करयो, ''ओ कांई हुयो? इयां कियां हुयग्यो?''

सगळी बस्ती में दोनूं रो घणो लाड-कोड। अै दोनूं सगळां रै मूंडै लागता हा। बस्ती सगळी दुखी होयगी। बापड़ी विमला री जिंदगी रो सूरज तो ऊगतां ई बिसूंजग्यो। अबै विमला री हालत घणी माड़ी। लोही भरयो मूंडो अर दो-दो टाबर गळै में, मालिक इसो बगत तो बाप नैं मारणियै नैं ई नीं दिखावै।

विनोद रै घर-परिवार रा तो विमला नैं ई कोसै हा, ''रांड डाकण, म्हारै छोरै नै खायगी।''

विमला री पहाड़ जिसी जिंदगी। दो टींगर गळै में। अबै विमला री आंख्यां आगै अंधारो-सो छायग्यो। अबै कांई करूं अर कांई नीं करूं? विमला रै पीहर कानी सूं भी दिन ऊग्योड़ो हो। अबै कुण दुख रा दिन कटावै।

कोरियां रो बास, भुट्टां रो चौरायो (बीकानेर) राज. 334001 मो. 9680868028

 ISSN : 2320-0995

विमला नै कोई सारो देवै तो भी लोग बां कानी आंगळी उठावै। दिन-महीना निकळतां कीं ठा नीं लागै, पण बा कैवत है नीं कै रांड रंडापो काढै पण सोधा काढण नीं देवै।

विमला री कद-काठी कांई, रूपां फाटै। उघाड़ो मांस...! केई सैणी लुगायां विमला नैं समझाई, ''देख बेटा, इत्ती पहाड़ जैड़ी लांबी उमर कियां काटसी?'' पछै धीरै-सी समझाई, ''फलाणियै-फलाणकी नातो कर लियो, आज बै राज करै। तूं भी कोई टैम सारू घर करलै। बापड़ा टाबरिया पळ जासी अर थारो भी बसेपो होय जासी।

विमला हिम्मत कर'र कीं इन्नै-बिन्नै मजूरड़ी कर काम चलावै। बगत बीततां कीं ठा नीं लागै। पण लोगां री गिरजड़ै-सी निजरां नैं कुण रोकै? विमला कित्तो ई आपरो डील लुकावै पण लुका'र कित्तोक लुकावै! भूख तो लागै। मजबूरी है। औरत जात रै साथै टाबरां री जरूरत। बियां तो विमला घणी बोल्ड ही पण...!

विमला डेरा-डांडां में झाड़ू-मसोता कर आपरो पोरियो करती पण रंडापो काढणो बडो दोरो। पग कित्ता ई संभाळ'र राखो, लुगाईजात री अक्कल निकळतां कीं ठा नीं लागै। विमला मन ई मन सोच्यो, मरोड़ै लारै मरीजै तो कोनी। आं टाबरां नैं ई पाळ-पोस'र बडा करणा। विमला अबै पटरी सूं उतरती अक्कल काढणियां रै चंगुल में फंसती लागी।

टाबर स्कूल जावण लागग्या। कीं खरचा बधग्या। तन री भूख अर पेट री भूख मन नैं गुनैगार बणा देवै। विमला भी हवस री शिकार बणती-बणती अेकअपुसर रै धक्कै चढगी। विमला अबै अेक खूंटै बंधगी। बो अफसर भी इसी प्रीत पाळी कै विमला नै चपड़ास्यां में नौकरी लगा दी। विमला रा दुख रा दिन अबै सोरा कटण लागग्या अर दोनूं टाबरिया ई आछा पढग्या।

विमला रै रैण-सैण में कीं बदळाव देख'र पीहर-सासरै वाळा भी जिका हिकारत री निजरां सूं देखता, बै भी कीं नैड़ा आवण लागग्या। भगवान सदा को रूठै नीं। विमला रा दोनूं छोरा पढता-पढता अबै अेक मास्टर अर अेक पटवारी री ट्रेनिंग काढण लागग्या। जिका लोगबाग विमला नैं लुच्ची-मालजादी, बेस्या अर जगत रो बिछावणो कैवता, अबै बांरै मूंडै ताळो लागग्यो।

विमला री जिका लोग बुरायां करता अरविमला सूं छींभा खावता अर अठै तक कैवता कै रांड मालजादी, छोरा ठगणी, जगत रो बिछावणो, बै लोग ई अबै बियै मूंडै सूं ई कैवै बापड़ी रांड रूड़ी, दुखां सूं घणो संघर्ष करयो, टाबरां नैं मिनख बणाय'र आज समाज री आंख्यां खोल दी। लखदाद है विमला नैं। आ बा ईज विमला ही जिकै नैं लोग देखणो तक पसंद नीं करता, बांरा ई टाबर अबै विमला नैं चाची, मौसी, भुआ अर मामी कैय बतळावण लागग्या।

विमला रा छोरा कांई घी रा घड़ा है। मां रै डोळां सूं डरै। बै घर सूं पढण अर पढ्यां पछै सीधा घरै। अबार मास्टर अर पटवारी री ट्रेनिंग करै। विमला रा दोनूं छोरा आपरै बाप रै उणियारै। दोनूं री कद-काठी ई अेकसी। दोनूं ई फूटरमल। देख्यां भूख भागै।

अबै लोगां री आंख दोनूं छोरां नैं टांचण में ही। छोरां नै झप्पण सारू विमला री पगचांपी में घरां अर दफ्तर तांई पूगण लागग्या। विमला अबै आंख्यां भर आपरै बीत्यै दिनां नैं याद करै। जद तन रा कपड़ा अर आपरा पराया तक बैरी हुया हा, आज म्हासूं सूग करणिया म्हारी छियां बैठण सारू तरसै। वाह रे सांई! बगत बदळतां कीं बार नीं लागै। विमला रै टाबरां नैं खरीदण सारू लोगां बीं रै घर रो लेव ले लियो अर विमला रै गुणां रा बखाण करता अबै थकै ई कोनी।

विमला रै टाबरां री ट्रेनिंग पूरी होयगी अर रिस्तां माथै रिस्ता आवण लागग्या। अठै तांई कै आगला कारां तक देवण नै त्यार। विमला आंख्यां भरती, ''वाह रे वाह मालिक, जद रोटी नैं तरसता जद कोई नैड़ा नीं आवता, आज म्हारा टाबरां नैं देख'र...!''

विमला तो बा ही है जिकी सूं लोग सूग करता अर बीं नैं देख'र मूंडो आंगो-खांगो करया करता। अबै विमला दूध सूं धोयोड़ी इयां होयगी, क्यूंकै आज बीं रा छोरा कामयाब है।

विमला रै बारै में लोग इयां भी कैवै कै विमला सूं आपां नैं कांई करणो है, छोरा तो विनोद रा है। विमला कठैई मूंडो मारयो तो बा तो बापड़ी मजबूर ही। बापड़ा छोरा काल नौकरी लाग जासी, आपणी छोरयां तो सुख पासी। लोग इयां ई कैवता रैसी। नूंवी बात नौ दिन अर खींचीताणी तेरह दिन।

विमला रै टाबरां री नौकरी लागगी। विमला रै देखण जिसो खुद रो घर। घर नैं देख्यां भूख भागै। अबै पीहर अर सासरै वाळा विमला नैं पूछ-पूछ'र हरेक काम करै। अठै तांई कै हांडी में लूण भी घालणो हुवै तो विमला घालसी।

विमला बगत रै छियां-तावड़ै सूं निकळ'र बगत सूं बगत रै बां बोलां री गूंज सागै मालिक सूं अरदास करती। मालिक रो शुक्रिया अदा करती अर कैवती, ''थारी लीला नैं तूं ई जाणै सांवरा!''

विमला रै दोनूं छोरां रो ब्यांव दीपता-दीसता घरां में हुयो। जिका घर कदैई विमला नैं देख'र ठाह नीं कांई-कांई कैवता, बै आज विमला जी कैय'र बतळावै। भगवान नाक री डांडी ऊभो है। जिको ऊंचो जोवै बो नीचै पड़ै अर जिको ऊपर थूकै बीं रै थूक हलक पर पड़ै। विमला बोली, ''बगत री बात है, बगत कांई रो कांई कराय देवै। बगत ईज इतिहास बणै।

◆◆

विमला महरिया 'मौज'

राजस्थानी लोकगीतां में सगां रो लाड करै गाळियां

लोकगीत लोक रा गीत हुवै, जिकां नैं कोई अेक मिनख कोनी गावै बल्कै आखो लोक गावै अर समाज आं गीतां नैं मानता देवै। अै गीत समूळै लोक में प्रचलित हुवै। लोक ई आं रो सिरजण करै अर लोक रो आपसी ब्योहार ई इण गीतां मांय गाईजै। लोक आपरै आणद री तरंगां मांयं डूबतो-उतरातो आपरी वाणी नैं छंदां अर बंधां सूं सजातो सैज ई इण गीतां रो सिरजण करतो रैवै।

अै गीत लोक मांय पैली सूं प्रचलित, किणी खास मौकां रै वास्तै सृजित अर लोक विसयां नैं समाहित करतां थकां लोक रै साथै बैवता रैवै, गाईजता रैवै। इण गीतां रो कोई लिख्योड़ो विधान तो कोनी मिलै पण लोगां नैं आं रो समूळो परिचै हुवै। मिनख जमारै में मोकळा संस्कार व्याप्योड़ा हुवै। जलम सूं लेय परण अर मरण रै संसकारां नैं लोकगीतां सूं सजायोड़ा है अर आ ईज लोक री रीत है, संस्कृति है कै सगळै आणां-टाणां में गीत गाईजणा चाईजै। लोकगीतां रो बधापो करणै में लुगायां री महताऊ भूमिका है अर वांरै साथै इण गीतां रै लिखारां अर लोकगायकां रो भी मोकळो योगदान है। लोकगीत टाबरां रै जलम सूं लेयनै मूंडण, जनेऊ धारण, ब्यांव सावै, तीज तिंवारां माथै लोकवाद्यां री संगत साथै अर बढिया ढाळ साथै गाईजै।

लोकगीत आपणै समाजू जीवण रा सांवठा साचा अंग हुवै। इण गीतां रो मूळ उद्देश्य हंसी-मजाक मनोरंजन ई कोनी

'श्री श्याम कृपा', शिव कॉलोनी, वार्ड नं. 9, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राज. 332311 मो. 9461541031

हुवै। अै गीत समूळै लोक रो आईनो लखावै। घणकरै समाजू पहलूआं रो दरसाव इणां मांय गैराई सूं हुवै। लोकगीतां रो सीधो संबंध गांवां अर देहातां सूं है। इण गीतां में लोक रो अतीत सामल हुवै अर अेक पीढी सूं दूसरी नैं बिना किणी लिखित विधान रै सूंप्या जावै। अै गीत भूल्यै-बिसरायै जीवण जुगत री कहाण्यां सुणावता-सा लखावै। लोकगीत लोक री धरोड़ मानीजै अर लोक संस्कृति री आतमा ई कैईजै।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर लोकगीतां नै संस्कृति रो सुखदाई संदेस ले जावण वाळी कला रो नांव दियो। महात्मा गांधी लोकगीत नैं संस्कृति रो रुखाळो अर लोक री भासा बतायो।

राजस्थानी संस्कृति मांय लोकगीत घणा महताऊ अर लोकचावा है। अठै छोटा-मोटा सगळा मौकां माथै लोकगीतां रा गरणाट उपड़ता दीखै। राजस्थान रै लोकगीतां मांय लय अर ताल मिलावण वास्तै सारथक सबदां साथै बाधू सबदां नैं ई जोड़'र गीत नैं गावण जोगो बणा लियो जावै। राजस्थान में ब्यांव-सावां अर तीज-तिंवारां साथै घणकरै औसरां माथै लोकगीत गाईजै। मांगळिक गीतां साथै हंसी-मजाक अर ओळमां रा गीत भी गाईजै। इण हंसी ठिठौळी रै गीतां नैं लोकभासा में 'गाळ' अर 'सींठणां' कैवै। राजस्थान रै शेखावाटी री बात करां तो अठै सगळै मांगळिक औसरां माथै घणा गीत गाया जावै। अठै रा गीत, गीतां रै इतिहास में आपरी अलायदी पिछाण राखै। जलम सूं लेय'र मरण तांईं रा भांत-भांत रा लोकगीत परंपरागत रूप सूं लगोलग गाया जावै। इणी भांत जद राजस्थान में लाडेसर अर लाडलड़्यां रो ब्यांव हुवै तद पैलपोत बरात सूं आगै सगां रो नाई बधाईदार रै रूप में आवै बीं नाई नैं वधू-पख री लुगायां जे सुणावै सींठणा जिका सुणतां घणो आणंद आवै :

झाबर झोळो सगां रो नाई फूटरो जी राज
बडो बरोळो सगां रो नाई फूटरो जी राज
नाक चीणो-सो, आंख बटण स्यी
मूं सुई सो, पेट कुई सो
धमधोळो सगां रो नाई फूटरो जी राज...

ओ सींठणो सुण'र बापड़ै नाई रो मूंडो देखण जोगो हो जावै!

इणी भांत जान जद तौरण आवै अर बींदराजा तौरण मारणै री रीत निभावै तद वधू-पख री लुगायां सगळै बरातियां रो भोत पाणी उतारै :

झेदली सुपारी बाई झेदला पान
झेदला झेदला आया जान
काळी सुपारी बाई काळा पान
काळा काळा आया जान

सूकड़ी सुपारी बाई सूकड़ा पान
सूकड़ा ई सूकड़ा आया जान
काणती सुपारी बाई काणत्या पान
काणत्या ई काणत्या आया जान

इणी भांत अर इणी मौकै माथै मींमली रो गीत गाईजै :

लूंग लै 'र री मींमली तूं क्यूं रूसी अे
रूसूं न तो के करूं बापकाणा मोटा ई मोटा आया जान में
साची कह छै बापड़ी, भलांई रूसी अे
लूंग लै 'र री मींमली तूं क्यूं रूसी अे
रूसूं न तो के करूं बापकाणा बूढा ई बूढा आया जान में
साची कह छै बापड़ी, भलांई रूसी अे

तौरण मारियां पछै बींदराजा फेरां बैठै जणां ई बींदराजा रै आंगळियां रा माजना सींठणा सूं पलीत करिया जावै। अेक उदारण देखण जोगो है :

थांनै परणा झौट आंगळियो म्हारै कंवर बन्नासा नैं हूर
थांरी मायड़ राखै कोनी बहू-बेटां रो सऊर
निरखो-परखो खोल ले ज्यावो ठाणां सूं भूरी झौट...

इणी भांत जद पांवणा जीमण जीमै तो बांरो खायो-पीयो पाछो काढण जोगा सींठणा लुगायां घणी ऊंची ढाळ में गावै अर सगां नैं मोकळा चिड़ावै :

थोड़ी खाज्यै म्हारा सगा मसूरियै री दाळ
डिड मत छोडो अणभावै तो कर दो टाळ
दाळ पीवतां घणी सपड़गा मौधा पड़गा
सगां जी रै पेट में अड़बड़ माची गड़बड़ माची
तीतर बोल कबूतर बोल्या
डूंगर चढता मोरिया बोल्या—पीहूऽऽऽ
क थोड़ी खाज्यै म्हारा सगा मसूरियै री दाळ

इस्यो ई अेक और सींठणो देखण जोगो है :

गिंऊं अे चीणां रो चून, गुलगलो म्हे करियो जी राज
आई आई सगाजी री जोड़, गुलगलो ले गई जी राज
आई आई सगी बण चील, गुलगलो ले गई जी राज
लेज्या सौकण लेज्या थारै हूक पड़ै तो लेज्या
थांरा टाबर रोवै लेज्या थारो सायब लड़सी लेज्या
गुलगलो म्हे करियो जी राज।

जीम्यां पछै चळू कर'र सगा-समधी आंगणै बिचाळै भेळा बैठै अर बतळावै। पछै बिदाई री घड़ी आवै अर सगळां रै तिलक लगाय पैरावणी देवै। पैरावणी री बेळ्यां वधू-पख री लुगायां फेरूं सगां नैं गाळ सुणावै। अेक दाखलो जबरो है :

अेलड़ली बन बेलड़ली बादळियो क्यांनै छायो है
छायो है छपायो है सगो जी क्यांनै आयो है
सगाजी री जोयड़ पाडो जायो, छानी लेवण आयो है
छानी रो अेक छालो देस्यां, गाडो क्यांनै ल्यायो है

इणी भांत पांच-सात ढांडां-ढौरां रो नांव लेय गाळ नैं आगै बधावै। अेक दूजो दाखलो ई घणो सांतरो है :

बावनियो बैठ्यो पाटड़ै पैरावणी मांगै
पहर जोयड़ रो घाघरो झड़कावत डोलै
जूंआं भरियो घाघरो घमकावत डोलै
मूछलियो बैठ्यो पाटड़ै पैरावणी मांगै।

ईं तरियां राजस्थान रै लोकगीतां मांय गाळ अर सींठणा रो अळगो अर मसखरियो रूप देखण नै मिलै। लोकगीत गाळ बिना अधूरा ईज लागै। ब्यांव-सावां री भागदौड़ सूं हुयोड़ी थकान नैं मिटावण साथै मनरंजण रो काम ई सींठणा सूं पूरो पड़ जावै, साथै-साथै रिश्ता-नातां में आपसी जुड़ाव अर मिठास ई आं गीतां सूं भरीजती रैवै।

◆◆

हंसराज साध

लोकदिखावो

कैलास परबत पर शिव-पारबती जी बैठ्या ग्यान-धरम री गुरबत कर रैया हा। पारबती जी भोळैनाथ नैं पूछ बैठ्या कै म्हाराज! मिरतुलोक में म्हारो अेक भगत है सेठ जमनादास। बो धरम-पुन अर दान-करम घणो करै। आपां आज बठै जाय'र भंडारै में बीं नैं दरसण देवां।

शिवजी, पारबती रै मूंडै आ बात सुण'र थोड़ा मुळक्या अर बोल्या, ''सती, तूं सोचै ज्यूं कोनी। मिरतुलोक रा जीव खोटी बुद्धि रा हुवै। बै दिखावो घणो करै। बै तन रा ऊजळा पण मन रा काळा हुवै।''

आ सुण'र पारबती बोली, ''म्हारा सगळा भगत खराब नीं हुवै। म्हैं थांरी आ बात मानूं कोनी।'' शिवजी विचार कर्‌यो कै लुगाईजात झट विचार नीं करै, तरकबुद्धि हुवै। आ सोच'र शिवजी बोल्या, ''आज आपां परीक्षा करां, चाल थारै सेठ जमनादास री हवेली। पण बठै आपां नैं मांयनै ई नीं बड़ण देवैला, भंडारै में जीमण री तो बात ई न्यारी है।''

पारबती जिद झाल'र झट परीक्षा खातर चाल पड़ी। मिरतुलोक में दोनूं आपरो भेष बदळ्यो। दोनूं मंगता-मंगती रो रूप बणाय हवेली साम्हीं जावण लाग्या। रस्तै में सेठां री हवेली में घणा लोग-लुगाई आय-जाय रैया हा। हवेली रै ठीक साम्हीं

माताजी रै मिंदर कनै, पुराणी गिन्नाणी, बीकानेर (राज.) 334001

अेक ठाडो होम होय रैयो हो। होम में सेठ-सेठाणी बैठ्या हा। बिरामण हवन कर रैया हा। च्यारूं तरफ स्वाहा-स्वाहा होम री आवाज होय रैयी ही। मोटा-मोटा सेठ-साऊकार अर अमीर लोग सेठां रै होम रै पंडाल में बैठ्या हा।

शिव-पारबती दोनूं मंगता-मंगती रै रूप में पंडाळ में घुसण लाग्या तो बठै खड़्यो संतरी दोनूं नैं डांग सूं छैड़ै कर दिया। मंगतो-मंगती बार-बार मांय घुसण री कोसिस करै पण अंदर जावण नीं देवै। शिवजी, पारबती साम्हीं देख'र मुळक्या। पारबती आपरी निजरां नीची करली।

शिवजी बोल्या, ''सती, पंडाळ में तो जावण नीं देवै। आपां भंडारै में जाय'र पैली जीमसां। थारै भगतां रा माल-मलिदा बणायोड़ा है।'' अबै दोनूं हवेली साम्हीं जावण लाग्या तो मांय घुसती बगत संतरी बांनै टोकता बोल्या, ''अरे कुमाणसां! कठै साम्हीं आवो? अठै सेठ-साऊकारां रो रस्तो है। पैली अै लोग जीमा-जूठा करसी, बाद में बच्यो-खुच्यो माल थांनै देस्यां। चालो अठै सूं, छैड़ै हुज्यावो!''

शिव-पारबती दोनूं घणी ई बार मांय घुसण री कोसिस करी। आखिर में संतरी दोनूं रा बूकिया झाल'र नीचै पटक दिया। आ देख'र पारबती री भांपणां तणगी। शिवजी अंगूठै सूं सैन करी कै सांयती राख। पर पारबती जी रो क्रोध रुक्यो कोनी। बै भाभड़ाभूत हुयोड़ी बोली, ''अरे सेठ जमनादास! तूं तो दिखावै री भगती करै। थारो खोटो दाणो ठाकुर जी रै नीं ढै। जा, थारो सगळो पूजापाठ निष्फळ हो जावै।''

सराप लागतां ई सेठां री हालत खस्ता होयगी। रात नै सेठा नैं सपनै में ई माता पारबती रो सराप सुण घणो पिछतावो हुवै। सेठां नैं माता कैयो कै तूं लोकदिखावो करयो। गरीबां नैं दूर राख्या। म्हैं शिवजी सागै भेष बदळ'र आई पण थारै पंडाळ अर हवेली में म्हनैं ई प्रवेश नीं मिल्यो। थारी सेवा निष्फळ हो जावै।

शिवजी, माता पारबती जी नैं कैयो, ''सती, ज्यादा दुखी हुवण री जरूरत कोनी। कळजुग में धरम-करम लोकदिखावै रो ज्यादा हुवै। साचा भगत कम ई मिलै। पारबती शिवजी री बात सूं सैमत होयगी।

◆◆

बी.एल. माली 'अशांत'

जगपति : दो कवितावां

(अेक)

जगपति!
माटी धरती री मां है!
माटी धरती में जीव भर्‌यो है
म्हैं जीवण!
म्हैं आदमी नीं हूं, जगपति!
म्हैं माटी रो पसीनो हूं।
×× ××

(दो)

जगपति!
आवो, बैठो!
देवो जाण
कै काढ लेवां!
लोग तो के बेरो के-के कैवै है, पण
म्हैं आपरो नांव सुण्यो है, देख्यो नीं!

3/343, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान) 302017 मो. 9414386649

आवो! अेक-दूजै नैं देखल्या!
बियांस तो आप भगवान हो पण
आपनैं कदैई देख्या कोनी
साच्यांई, आप कुण हो? बतावो!
आप म्हारै सारू ओपेरा हो।
जगपति!
जाण-पिछाण काढ लेणी गळत नीं है
बडा लोग भी आ ई बात कैयी है।

आपनैं कदैई देख्या कोनी जगपति!
आप बतावो, आप कुण हो?
म्हैं म्हारी बतावूं!
म्हैं आदमी नीं हूं, जगपति
आदमी रो पसीनो हूं।
आप कुण हो? भगवान हो, आछी बात, पण
असल में आप कुण हो?
के माया है थांरी?
पूछणो चावूं, बतावो!
आप बोल्या ई कोनी? के बात है!
आप भाड़ा रा तो नीं हो?

◆◆

ISSN : 2320-0995

डॉ. अनिता जैन 'विपुला'

पीहर-सासरो

चिड़कली ज्यूं
खिलकती
फुदकती
नूंवी नवेली बीनणी
जद चालै पिव रै घर
पीहर री थळगट माथै
बिखरा जावै
आपरी चांवना री
सगळी फूल्यां।

हियै मांय
अदीठो-सो डर लेय
बा चालै अेक नूंवै घर
परिवार-संस्कार अर
लोगां रै बिचै
आंख्यां मांय सुपना
पिव रा संजोवती।

पीहर में जो हंसती
मूंडो फाड़
सासरियै में बा सोचै चार बार
जो मरजी करती पीहर मांय
जद चांवती
सोवती-उठती-बैठती
पण सासरियै मांय
सब री मरजी रो राखै
पैली ध्यान।

सासरियो सजन संग
बस्यो सपनाळू
संसार है तो
पीहर धक-धक
धड़कती धड़कण है
नेह री अबूझ तिस्स है
सासरियो सरीर अर
पीहर प्राण है।

फ्लैट नं. के-301, राधेकृष्णा अपार्टमेंट, कृष्णा विहार, न्यू विद्यानगर, सेक्टर 4
हिरण मगरी, उदयपुर (राजस्थान) 313002 मो. 9829646220

सिणगार

पिवजी सूं हुयगी म्हारी आंख्यां च्यार
म्हारा साहिब जी म्हार सै सिणगार

म्हारी मांग रो सुरंगो सिंदूर बलम जी,
टिकली माथै री म्हारै काळजियै री धार

लाखीणो सतरंगी चुड़लो छणकाऊं,
लाल काळी चीढ्यां रो थे नौसर हार

पकड़ी थे बांह तो बाजूबंध बणग्यो,
लूमा-झूमा झूमर झूम्या पळकैदार

आलिंगण रो भळको घेर घूमरवाळो,
कसूंमल ओढणी माथै करघनी रा तार

नथली बिछुड़्या पाजेब घुंघरू वाळी,
पिव री संगत में हारी मनड़ो या नार

सुहागण सरसै देख सजन नैं हरसै,
घड़ी पलक नीं दीसै तो बण जावै थार

सांसां रा सिणगार अदीठा प्राण पीव में,
प्रेम री दीठ रो ओ अबोलो निराळो संसार।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

मीनाक्षी पारीक

हे शिव! अेकर पाछा बावड़ो

(अेक)

समंदर नैं मथ'र
जद थे पीयग्या
अवनी रो सगळो ज्हैर,
तो फेर...
क्यूं छोड दियो!
लोभ, गरब अर जिद रो
बिसकुंभ ?
मानखो
आ कुटैब सूं
नाख दी परै...
बडेरां री
लूंठी दीठ सूं सोध्योड़ी
सीखड़ली, रीत-रिवाज
अर काण-कायदो।

बो नेम,
जको जोड़तो भाइपै नैं
आजै लोभ री
लाय सूं सूखगी
अपणेस अर हेत री
खळ-खळ बैवती नदी
अर पसरगी बिस-बेल
गांव, कड़ूंबा मांय
फूटग्यो ज्हैर....
लोभ री छांटां सूं
मिनखजूण मांय
हे तिलोकी रा नाथ!
अेकर बावड़ो पाछा
अर पीवो ई ज्हैर नैं।

33, ओमनगर, सफेद मंदिर रै कनै, खातीपुरा, जयपुर (राजस्थान) 302012 मो. 8824061780

(दो)

जद रळ-मिल'र
रागस अर देवता
मथ्यो समंदर
इमरत तांई
निकळ्यो
नीरो ज्हैर
पण
कुण पळोटै
इण ज्हैर नैं।
कुण कैवै
मौत नैं मावसी ?
थे करयो न्याव
बचायो—
मोवणै सिरजण नैं
पीयो नीरो ज्हैर
अर बांधी
म्रिस्टी रै दरूजै।
सुख सांयत री बांदरवाळ
थे... शिव
थांकी ई महती खेचळ सूं
बचगी आ
जगती अर जुगत।

(तीन)

तिरलोकी रा नाथ
हे त्रिकाळदरसी !
थांकी अेक दकाल पे
धूज्यो
आभो, भौम अर पताळ
देव अर दानव
माच्यो फैताळ
तीनूं तिलोकी मांय
जदै
कीधी अेक बाप
राजा दक्षण फजीती
बेटी रै धणी री
हे शिव !
अरज करूं—
मांडो काळ रै माथै पे परलय।
बण'र महाकाळ
अेकर ओळखो
कळजुग री
कुरजबी भाळ नैं
बिलखै है डीकरियां
ठौड़-ठौड़ !
करै कुबद
सतावै दोखी मानखो
अवनी रो रागस
जिलफ बेटी नैं।

◆◆

ISSN : 2320-0995

अनीता सैनी 'दीप्ति'

अघोरी काळ

फागण रा फुलड़ा चुगता
बळ खावै अघोरी काळ
मूंडो निरखै काच में
काजळ पर कामण गवै
चुनरी लहरावै लाल गुलाल
रूंखड़ां नैं देख पूछै कई सवाल
भाई !
पैल्यां सो रंग न चढ्यो
न साख माई पुरखां-सी जान
झड़-झड़ पड़्या बेरुत का बैर
थान-सूरज सुखायो या
भाळ की है या चाल ?
टैम घड़ी रो दोस कोनी
विचारां नैं कुतरता कीड़ा
जड़्यां तांई फैल्या
भविष्य रा
सांघणा जंजाळ !

बिरह

दुख-सुख रा तिणका
माणस बटोरै बाड़ां बैठ
काळ उळझावै
फेंकै लालच री गोट्यां च्यार
करम री कूंपळां
चेतना रो फुलड़ा
छोडा भावां रा सूख्या
देख सुबकै काळजियो
तड़पै रिश्तां री डोर
डोलै पीर अेकली
खाली कुठला-सी गूंजै
फकीर-सी डोलै
माई ! म्हारै मन री रेत सुबै
देख खाली जग री झोळ्यां
प्रीत सूं खाली
तारां री छांव चांद रै गांव
अर माणस भूखो सोवै !

दूजो माळो, बी-118, करधनी स्कीम, कलवार रोड, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) 302012 मो. 6350497759

भाव री रेत

पग पकड़ बांधै प्रीत
साथी बण बांह फैलावै
काळजियो बींधै घड़ी-घड़ी
इण खूणै सूं बीं खूणै
बैठै कुवां-पाळ
आंगणा टुग-टुग चालै
थळिया मांय पसरै
कदै निसरै बापू जेबां सूं
मां की पेटी रै खांचै सूं
भाई री नोंक-झोंक अर
ओळ्यूं बण बिखरै पोळ्यां में
भावां री रेत मुट्ठियां सूं फिसळै
अेकली सुबकै सांझ-सवारे
जगावै ढळती रातां नैं।

आंख्यां सूनी जोवै बाट

गोधूळी री बेळा छंटगी
सांझ खड़ी है द्वार सखी
मन री बातां मन में टूटी
बीत्या सब उद्‌गार सखी!

मन मेड़ां पर खड़्यो बिजूको
झाला दे'र बुलावै है
धोती-कुरता उजळा-उजळा
हांडी शीश हिलावै है
तेज-ताप सी जळती काया
विरह करै सिणगारसखी!

पाती कुरजां कहै कुसळता
नैणा चुंवै फिर भी धार
घड़ी दिवस बण संगी-साथी
चीर बदळता बारंबार
घूम रैयो जीवण धुरी पर
विधना रो उपहार सखी!

आती-जाती सारी रितुवां
छेड़ स्मृति का जूना पाट
झड़ी लगी है चौमासा की
आंख्यां सूनी जोवै बाट
कूंपळ जंइया आस खिलाऊं
प्रीत नवलखो हार सखी!

◆◆

ISSN : 2320-0995

राजेश विद्रोही

(अेक)

इक हिंवाळो फेर गाळ्यो जायलो
और फिर ऊं नैं गुदाळ्यो जायलो

च्यार छै म्हीनां उबाळ्यो जायलो
फेर बो मुद्दो उछाळ्यो जायलो

कद तलक आतंक पाळ्यो जायलो
और कद ओ खोजबाळ्यो जायलो

ओ उघाड़ो मांस पतहीणां मिनख
अब नहीं हर्गिज रुखाळ्यो जायलो

ओ चरू है हाल सारो साबतो
पण कमीशन खांण झाळ्यो जायलो

जे अळीतै पर बिठा दी जांच तो
सरिदये सूं फेर न्हाळ्यो जायलो

गळगळी बकरै की मां बोली, बनां!
अेक थावर नीठ टाळ्यो जायलो

अरथ-उघाड़ :

हिंवाळो=हिमायल। खोजबाळ्यो=अेक गाळी। अळीता=आग। सरदिये=सरकंडे नैं बाळ'र करीजी चिन्हीक रोशनी। न्हाळ्यो=तलाश्यो। गळगळी=भर्रायै गळै सूं बोलणो।

नीलकंठ महादेव रोड, लाडनूं, जिला-नागौर (राज.) 341306 मो. 9785505095

(दो)

थोथो थूक बिलोई ना
कुळ मरजादा खोई ना

साची बात ल्हुकोई ना
कूड़ा अरथ ढुकोई ना

आटै को अनुपात राखजै
साव लूण की पोई ना

गैड़ गैड़ चाल्यां जाई तूं
ऊंधी घरट्यां झोई ना

सै अपणी ही लांग टांकरया
अठी बठीनै जोई ना

चोर-उचक्का नैं लुच्चां नैं
कदै कठैई ढोई ना

नांव ठावको है बडकां को
ई नैं कदै डुबोई ना

कछुवै जियां चालतो रीजै
सुसियै री ज्यूं सोई ना

बणगी व्है तो गजल पेश है
नहीं बणी तो कोई ना

◆◆

ISSN : 2320-0995

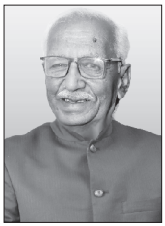

सज्जन लाल बैद

आडो सब के आवणो

(1)

आडो सबके आवणो, आडो मतना आय।
आडो आवै जो नरो, सब के मन को भाय।।

(2)

आडो घर को बारणो, आडी आछी खाट।
ऊीा खाट बिगाड़ दै, घर को सारो ठाट।।

(3)

आडो सोग्यो बजरंगी, आडी कर दी पूंछ।
आडो अंकबळ में भिमो, आडी पड़गी मूंछ।।

(4)

'आडी' आडी दादजी, साम्हीं आडी रात।
सोच समझ कर बोलजो, साची-साची बात।।

अरथ-उघाड़ :
आडो=कोई री मदद करणी।
आडो=रोड़ो अटकावणो।
आडो=बारणो, किंवाड़
आडो=सोवणो, कमर सीधी करणी।
आडो आंक= सै सूं आछो।

बैंक ऑफ बड़ौदा रै कनै, वार्ड नं. 13, पोस्ट-रतनगढ़ (जिला-चूरू) राज. 331022 मो. 9414402052

झाड़ समै अनुरूप

(1)

झाड़ पिलाओ कदि कदै, झाड़ पिलाओ रोज।
मिनख मानसी कायदो, झाड़ां बधसी ओज।।

(2)

झाड़ महैलां सोंवता, निरखत नैड़ा फाड़।
धूड़ जमी है झाड़ पर, झाड़ सकै तो झाड़।।

(3)

झाड़ धरा सिणगार है, झाड़ माळियां रूप।
झाड़ रोज आछी नहीं, झाड़ समै अनुरूप।।

(4)

झाड़ फूंक अर टोटका, झूठी इण री आस।
लेणा पड़सी बावळा, घाल्या जितरा सांस।।

◆◆

अरथ-उघाड़ :

1. झाड़=डांट, फटकार। झाड़=रूंख-बांठका।
2. झाड़=फानूश, कमरै री छात सूं लटकावण सारू।
3. झाड़=झाड़णो, सफाई करणो।
4. झाड़ू झाड़ दी=बेच न्हाख्या।
5. झाड़ फूंक=जंतर-मंतर।

(सोशल मीडिया सूं साभार)

कवि अणजाण

मचमची आवै ई है

गधै नैं लिटणै री
चींचड़ नैं चिपणै री
गाय-भैंस नैं खूंटै री
छोटै टाबर नैं अगूंठै री
मचमची आवै ई है!

मसखरै नैं मस्ती री
पैलवान नैं कुस्ती री
भजनी नैं जागण री
रसियै नैं फागण री
मचमची आवै ई है!

जाट नैं राबड़ी री
बूढां नैं गुलाबड़ी री
ठिठुरतां नैं रजाई री
ब्राह्मण नैं मिठाई री
मचमची आवै ई है!

माईतां नैं औलाद री
निकमै नैं कुचमाद री
जुआरी नैं जुवै री
पणिहारी नैं कुवै री
मचमची आवै ई है!

जंवाई नैं सासरै री
बेघर नैं आसरै री
कंजूस नैं लुकावण री
बाणियै नैं दिखावण री
मचमची आवै ई है!

गवैयै नैं गावण री
मोरियै नैं सावण री
चातक नैं बरसात री
बांदरै नैं उत्पात री
मचमची आवै ई है!

लड़ाईखोर नैं लड़णै नैं
फदड़पंच नैं बीच में पड़णै री
धूरत नैं मक्कारी री
बोखै नैं सुपारी री
मचमची आवै ई है!

सियाळै में सींरै री
नई परण्योड़ी नैं पींरै री
कुंवारै नैं ब्यांव री
सगळां नैं गांव री
मचमची आवै ई है!

राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'

स्वाभिमानी गोमती भाभी

मानीता कथाकार श्याम जांगिड़ रो नूंवो उपन्यास 'गोमती भाभी' राजस्थानी उपन्यास-जात्रा में अेक ठावो पांवडो है। केई साहित्यकार ओ उपन्यास बांचनै आछो स्वागत करियो है। फेसबुक माथै पाठकां री टीप सूं उपन्यास रो कथानक सांगोपांग साम्हीं आयग्यो। कथा-परिवेश चूरू अर आसलू गांव रो हुवण रै कारण म्हारो जुड़ाव कीं बेसी हुवणो लाजमी है। सरू सूं आखिर लग उपन्यास में पाठक नै बांधण री खिमता है।

उपन्यास रै सिरैनांव अर आवरण फोटू सूं ठाह लाग जावै कै कहाणी रै केंद्र में नारी है। लुगाई री अस्मिता रो सवाल लारलै केई दसकां सूं साहित्य में उठायो जावै। बीसवैं सईकै रै छेकड़लै बरसां में नारी अस्मिता रो मुद्दो खुल'र साम्हीं आयो। नारी नैं बंधन में राखण री अवधारणा टूटै लागी। नारी आपरै मानवी अधिकारां खातर बोलण री हिम्मत दिखावै लागी। उत्तर आधुनिक साहित्य में जको नारी केंद्रित सिरजण हुय रैयो है, वो घणकरो विमर्श रै खांचै में राख्यो जावै कै पछै अेक विचारधारा पोखण खातर रचीजै, पण गोमती भाभी अेक सैज-सरल बहाव में चालण वाळी कहाणी है। पश्चिम में नारी आंदोलन पुरुष रै बंधण सूं मुगत हुवण रो, स्वतंत्रता रो नांव है, पण आपणै अठै नारी जागृति रो म्यानो पुरुष री सत्ता सूं आजाद हुवण रै अरथ में कोनी। आ बात उपन्यास सूं साबित हुवै।

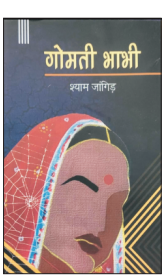

सावित्री सदन, सी-122, अग्रसेन नगर, चूरू (राज.) 331001 मो. 9414350848

 ISSN : 2320-0995

ईं जुग में ब्यांव पछै दूजै सूं शारीरिक सनमन अर कड़ूंबा टूटण री अणगिणती री कहाणियां है। 'लिव इन रिलेशनशिप' नैं भलांई कानूनी मानता मिलगी, पण जठै सनातन संस्कारां री जड़ां हरी हुवै, बठै ब्यांव रो साचलो अरथ अेक-न-अेक दिन साम्हीं आवै ई है। उपन्यास में मतिभ्रस्ट हुवतो प्रोफेसर सुधीर, 'लिव इन रिलेशनशिप' पछै घरकां सूं ओलै-छानै प्रोफेसर माया सूं दूजो ब्यांव रचा लेवै। अपराधबोध में जींवतो सुधीर, माया नैं वो सोक्यूं सूंप देवै जकै री असल हकदार फगत गोमती ही। कीं बरस पछै माया सुधीर नै लात मारनै आपरै घर सूं ई नीं, जिनगी सूं ई काढ नाखै। जकी गोमती आपरै हाथां सूं सुधीर रो चूड़ो तोड़नै पूठो घरां नीं बावड़ण री करड़ी सौगन दिरावै, वा ई गोमती बेमार-ढांचलै सुधीर नैं देख'र ढां-ढां करनै रोवण क्यूं ढूकै? बेमारी में सुधीर रो हीड़ो करै। बो कुणसो अदीठ तांतो है जको गोमती अर सुधीर नैं छेकड़ला सांस ताणी जोड़्यां राखै? गोमती री आतमा री आवाज आ ईज निसरै कै वा माया रांड सुधीर माथै कोई जादू कर दीन्हो। गोमती खुद आपरै धणी सूं बेसी प्रोफेसर माया नैं दोखी मानै। जद ई बा आपरै धणी नैं माफ कर देवै। जकै परिवेश सूं गोमती आवै, बठै आ चींत-चितार सुभाविक लखावै। अठै उपन्यासकार आपरी प्रगतिशील विचारधारा थोपण री चिनीक ई कोसिस कोनी करै। पात्रां रो परिवेश, जीवण-शैली अर सुभाव-संस्कार अैड़ा है कै कथाकार पात्रां सूं किणी भांत री जोरांमरदी कोनी कर सकै।

अणपढ गऊ बरगी 'गोमती भाभी' री करुण-कहाणी उपन्यास-नैरेटर, प्रकाश रै जरियै साम्हीं आवै, जको कथानायक रो बाळगोठियो है। प्रकाश सरू सूं लेयनै छेकड़ ताणी अेक आदर्श पात्र साबित हुवै। कथा में गोमती भाभी रा दो रूप देखण मिलै। अेक ठौड़ जोड़ायत रूप में दया-करुणा री मूरत है, तो दूजी ठौड़ धणी रै अन्याव रो विरोध दरज करै तो विकराळ रूप ई धारण कर लेवै। वा संस्कृति अर परंपरावां नैं अंगेजती थकी मान-सनमान खातर कोरट-कचेड़ी कोनी जावै। खुद ई फैसलो करै। सुधीर रा भेजेड़ा रोकड़ा पूठा मूंढा माथै मार देवै। टाबरी पाळण खातर खुद माथै भरोसो राखै। गोमती आ साबित कर देवै कै स्वाभिमान री रिछ्या खातर लुगाई कीं भी कर सकै। आज आ कैबत कूड़ हुयगी कै नारी सईकां सूं दब्योड़ी ही अर आज ई पुरुष बीं नै दाब'र राखणो चावै। केई ठौड़ गोमती री अणूती पीड़ रै दरसावां में आंख्यां भीजणी सुभाविक है, खासकर नारी-पाठक री।

जकी बात उपन्यास में अपरतख रूप सूं साबित ई हुवै बा ई म्हनैं निसंक लिखणी चाईजै। बा आ है कै लुगाई खातर समाज में बेसी सहानुभूति रै कारण घणकरा पाठक कथा-नायक सुधीर री पीड़ नैं पीड़ कोनी मानै। कारण ओ ई है कै सगळो कळेस सुधीर खुद मोलायो, जकै नै गोमती अर दोनूं छोरा भुगतै। जदकै गोमती री ग्रहस्थी तोड़ण रै मूळ में माया अर बीं री मां ई तो ही। अेक ढाळ सुधीर तो जाळ में पजग्यो। ओ साच जाणता थका आपां कैवण में संको करां। क्यूं कै, 'अेक लुगाई दूजी लुगाई री दुसमी हुवै' औ

कंसेप्ट हंकारणो पुरुषवादी सत्ता रै पख में जावै, हालांकि उपन्यास री केई घटणावां प्रोफेसर माया अर बीं री मां रै कूटचरित रो बखाण करै। नारी मुगतीवादी पाठक तो स्यात ई उपन्यास रो अंत ई दूजी ढाळ करता। विचारजोग है, सुधीर दूजो ब्याव करयां पछै हरमेस आपरै दोनूं छोरां अर गोमती री मदद करणी चावै। बो नीं तो गोमती नैं बिसराय सकै नीं आपरै दोनूं छोरां नैं। पैलड़ै परवार नै भागभरोसै छोड पीड़ रै समदर में बिलखता छोडणियो सुधीर आखी उमर पिसतावै में ई जीवै।

उपन्यास हर वरग रै पाठक नैं चींत-चितार सारू प्रेरित करै। आज री पीढी नै औ उपन्यास बांचणो चाईजै। पैलड़ा माईत टाबरां रा ब्यांव घराणो देखनै आपरी मरजी सूं कर देंवता। बै सनमन आखी उमर कियां चालता? जदकै आज मोटा स्हैरां में तो घणकरा सनमन छोरा-छोरी खुद तै करै, पण टूटतां घणो बगत कोनी लागै। ईं उपन्यास रो समै पाठक खुद ई तै करैगा। उपन्यास री छेकड़ली ओळ्यां ई विचार करण जोग है

''....कांई लुगाई अैड़ी मौत तांई ही आखी उमर फोड़ा भुगतै? जीवतै जी उण फोड़ा रो कोई सीरी कोनी बणै, पण हंसो उड्यां पछै उणरी ल्हास रो आदर मान हुवै! लुगाई जात रै जीवण री आ कैड़ी विडंबना है?''

म्हनैं लखावै कै अै ओळ्यां आज री बां मॉडर्न लुगायां खातर कोनी, जकी ब्यांव नैं अेक समझौतो मानै। इयां कैवणो ई गैर वाजिब कोनी कै अै ओळ्यां प्रोफेसर माया अर बीं री मां जैड़ी लुगायां खातर कोनी।

छेकड़ औ कैयो जा सकै कै अेक सौ दस पानां रो 'गोमती भाभी' उपन्यास रोचक है, जको अेक बैठक में पढ्यो जाय सकै। अेक बात अवसकर अखरै कै प्रकाशक प्रूफ देखण में कीं कसर छोड़ दीन्ही, जकी रड़कै। भासा सैज-सरल बैवती नदी जैड़ी है। उपन्यास नैं बांचतां थकां पाठक, कथाकार सूं न्यारो-निरवाळो पात्रां साथै जुड़ जावै। कथाकार, कठैई पात्र रै चरित माथै विचार लादण री खेचळ कोनी करै। कथानक री बुणगट जोरदार है अर संवाद पात्र मुजब ओपता है। उपन्यासकार नै मोकळा रंग।

◆◆

पोथी : गोमती भाभी / विधा : उपन्यास / उपन्यासकार : श्याम जांगिड़
प्रकाशक : मोनिका प्रकाशन, जयपुर (राजस्थान)
संस्करण : 2022, मोल : 250

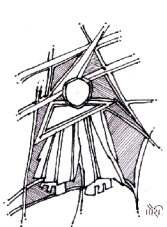

सी.एल. सांखला

संस्कार का बीज अर चरित्र की साख : 'खुशपरी'

टाबरां ईं कथा-कहाणी ठेठ सूं ई रुचिकारक लागती आई छै। दादी- नानी जीं बखत अपणा मुख सूं कहाणी व्है छी,ऊं बगत घर का बाळक अर आस पड़ौस का टाबर- टिंगर दादी-नानी कै ओळै दौळै आ भेळा होवै छा।दादी- नानी जद कहबा लागै तो हुंस्यार बाळक हुंकारा भरता। ...ओर आगै कांई हुयो ? या जाणबा लेखै दादी नानी की आडी ध्यान सूं देखबा लाग जाता। अेक-अेक कड़ी सुण'र भाव सूं भर जाता।पूरी कहाणी सुण'र तो घणाई राजी होता।

या ही भाव भूमि 'खुशपरी' की बाल कहाणियां में छै। दादीसा अपणा मुंह सूं बाळकां नैं ये कहाणियां सुणावै छै। बाळक भी दादीसा कै ओळै-दोळै आय'र चित्त-मन सूं कहाणी सुणै छै। ये कहाणियां अपणी बोली भासा में होबा सूं झट समझ में आ जावै छै अर कहाणी की सीख हरदा में बस जावै छै। राजस्थानी भासा साहित्य की ख्यातनांव प्रतिष्ठित लेखिका आदरणीया बसंती पंवार सा की सिरजी ये बाल कहाणियां टाबरां ईं सावचेत करै अर संस्कारित भी। ये कोरी परिकथावां कोइनै।आज की समै घड़ी ईं देख'र टाबरां नै सही मारग पै चालबा की आछी सीख देती साची कहाणियां छै।

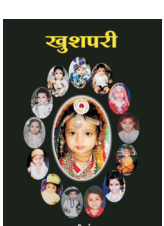

राजस्थानी बाल कहाणियां री ओपती पोथी 'खुशपरी' में इक्कीस बाल कहाणियां छै। ज्ये घणी ई पूरा मन सूं टाबरां ईं रुचै छै। रोचक होबा सूं यां कहाणियां की पठनीयता भी सहज ई बढ

'सबद वन', मु. पो. टाकरवाड़ा, जिला-कोटा (राजस्थान) 325204 मो. 9928872967

जावै छै। अेकर कहाणी बांचबो सरू करै तो पूरी पढ'र ई छोडै। आ कहाणीकार की सफलता भी छै अर कलम की सामर्थ भी।

'अमरफळ' कहाणी में नेहा अर अंशु नानी लेखै फळ खरीदबा बजार जावै छै। मारग में गरीब अर भूखो टाबर देख'र वै दोई अपणा पईसा सूं रोटी-साग लार ऊंई पेट भर भोजन करा दै छै। जद नानी वांसूं फळ-फ्रूट का बारा में पूछी तो वै बतावै छै कै वै तो पईसा सूं 'अमरफळ' ले आई। भूखा गरीब कै तांईं भोजन कराबा की बात सुण'र नानी घणी राजी होई। आ कहाणी मानवीय मूल्यां की लैरां ईं संस्कार भी नूंवी पीढी में उतारै छै।

'नेगेटिव-पोजेटिव' अेक असी कहाणी छै, ज्ये टाबरां नैं खेल ई खेल में विग्यान जस्या कठिन विषय की शिक्षा दै छै। माथ अर तितली की विग्यानसम्मत जाणकारी 'तितली राणी' कहाणी में मिलै छै। घमंड आछी बात कोइनै या शिक्षा मिलै 'खरगोश रो घमंड' अर 'गाय रो घमंड' कहाणी में। 'उपदेस' में बीमार को इलाज करबा की जगै ऊंई रीता उपदेस की घुट्टी पिलाबा को विरोध छै। दुखी मनख को दुख मिटाबा को जतन न्हं करबो अर उल्टा वूंई उपदेस सुणाबो चोखी बात कोइनै। 'गाळियां' कहाणी में कहाणीकार टाबरां ईं बतावै कै कोई मनख गाळियां बकै तो ऊंको पडूत्तर न्हं दै। मून हो जावै। ईं ऊंकी गाळियां पाछी ऊं बकबा हाळा मनख नैं ही लागै। राड़ बधै कोइनै, थमज्या छै। पाछै गाळी बकबा हाळो ई पछतावै छै।

ईं पोथी की सबसूं बढ़िया अर सिरै कहाणी छै—'खुशपरी'। खुशपरी अेक छोटी सीक छोरी छै, ज्ये गुमसुम अर उदास हो जावै छै। ऊंकी दादीसा सोचै कै हांसती-खेलती ईं छोरी की खुशी कुणनै खोसली ? दादीसा पूछी, ''तूं तो कैवती ही कै डाक्टर बण'र सुई लगाऊंला... !'' खुशी बतावै कै वूंई डाक्टर न्हं बणणो। वा तो मोबाइल बणबो चावै छै। दादीसा खुशी नै कुरेद'र पूछै तो पतो चाल्यो कै वूंका मम्मी-पापा आठूं फेर मोबाइल ही चलावै। खुशी सूं कोई बात ही न्हं करै। दादीसा खुशी की उदासी को असल कारण जाण'र खुशी का मम्मी पापा नै बिठा'र समझावै छै। वै अपणी गलती मान लै छै। खुशी खुश हो जावै छै।

सगळी कहाणियां रुचिकारक तो छै ई, ग्यान वर्धक बी छै। कहाणीकार नै बाल मन की साची पकड़ छै । सबसूं बडी बात या छै कै ये बाल कहाणियां टाबरां में संस्कार का बीज बावै अर चरित्र की साख उगावै छै। यां कहाणियां की भासा सहज, सरल अर बाल सुलभ छै। 'खुशपरी' स्कूलां अर पुस्तकालयां लेखै भी घणी उपयोगी छै।

◆◆

पोथी : खुशपरी / विधा : बालकथावां / लेखिका : बसंती पंवार / संस्करण : 2022
प्रकाशक : रॉयल प्रकाशन, जोधपुर (राजस्थान) / मोल : 250 रुपिया